

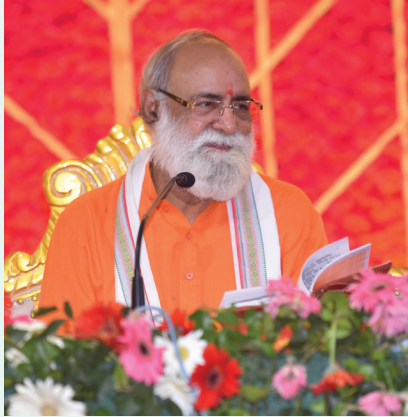


भारत श्री



सोमवार, 12 मई 2025 • वर्ष 6 • अंक 42 • मूल्य: 5 रुपए

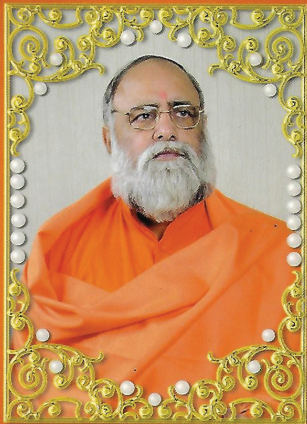
संत परंपरा का पुनरोदय....



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी कहते हैं कि मुक्ति और परमात्मा तक पहुंचने के लिए भाव, प्रेम और सरलता का होना बेहद जरूरी है मगर इनके स्थान पर कठोर नियम और कर्मकांड मनुष्य पर थोप दिए गए।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

जिन असाध्य रोगों का इलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

प्रभु कृपा के आलोक से निर्धनता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मां लक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

तमाम पहलुओं पर विचार नौसेना के आपरेशन ट्राइडेंट से जुड़ा अध्याय

@ भारतश्री ब्यूरो

पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ बढ़े तनाव के बीच तमाम पहलुओं पर विचार किया जा रहा है। पाकिस्तान पर संभावित कार्रवाई के विकल्पों के बीच अतीत के पन्ने भी पलटे जा रहे हैं। ऐसा ही एक अध्याय नौसेना के आपरेशन ट्राइडेंट से जुड़ा है। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान दिसंबर 1971 में भारतीय नौसेना ने कराची बंदरगाह पर औचक हमला कर दुश्मन को चौंका दिया था। उस हमले में तीन पाकिस्तानी पोत डुबो दिए गए। फ्यूल टैंक्स ध्वस्त किए गए। इसे भारत के सबसे सफल एवं आक्रामक नौसैनिक अभियानों में से एक माना जाता है।

हालांकि इस सफलता से जुड़ी सुखियों में यह तथ्य कहीं दबकर रह गया कि उस कामयाबी में ओसा-क्लास मिसाइल नौकाओं और युद्धक सामग्री की अहम भूमिका रही, जो सोवियत मूल की थीं। भारत ने भले ही वह लड़ाई जीत ली हो, लेकिन उस युद्ध ने विदेशी नौसैन्य तकनीक पर हमारी निर्भरता को ही उजागर किया था। उसके दशकों बाद भी यह सामरिक नाजुक कड़ी कुछ वैसी ही बनी हुई है। इस बीच भारत के समक्ष सामुद्रिक मोर्चे पर चुनौतियां और बढ़ी हैं तब स्वदेशी स्तर पर शिपबिल्डिंग यानी पोत निर्माण की जरूरत कहीं ज्यादा बढ़ जाती है। यह केवल औद्योगिक आकांक्षाओं के दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा की अनिवार्यता है।

वैश्विक अनुभव देखें तो शिपबिल्डिंग में लाभ ही लाभ हैं। यह रोजगार सृजन और तकनीकी क्षमताएं बढ़ाने के साथ आर्थिक वृद्धि को गति देता है। कई आकलनों के अनुसार शिपबिल्डिंग में निवेश होने वाले 1,000 करोड़ रुपये से 6,000 प्रत्यक्ष और 15,000 अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हो सकते हैं। वैश्विक शिपबिल्डिंग बाजार का आकार करीब 145 अरब डालर है। इसमें 47 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ चीन, 29 प्रतिशत के साथ दक्षिण कोरिया और 15 प्रतिशत के साथ जापान का दबदबा है। इन तीनों देशों ने 2023 में विश्व की 90 प्रतिशत से अधिक मांग को पूरा किया। जबकि एक बड़ी तटरेखा वाले भारत की हिस्सेदारी एक प्रतिशत से भी कम रही।

एक सशक्त शिपबिल्डिंग क्षेत्र केवल बंदरगाहों और सामुद्रिक आवाजाही को ही बेहतर नहीं बनाता, बल्कि इसके जरिये स्टील, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी और अन्य कौशल वाले व्यापारों को भी आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। दक्षिण कोरिया जैसे देश ने पिछली सदी के अंतिम पड़ाव पर अपनी औद्योगिक जड़ों को गहरा करने में शिपबिल्डिंग को आधार बनाया। आज भारत के सामने



भी वही स्थिति एवं अवसर विद्यमान हैं। भारत सरकार इन संभावनाओं को भुनाने के पूरे प्रयासों में भी जुटी है। वर्ष 2016 से 2021 के दौरान शिपबिल्डिंग फाइनेंशियल असिस्टेंस पालिसी के तहत 4,500 करोड़ रुपये की शिपबिल्डिंग सब्सिडी के साथ ही सागरमाला जैसे अभियान को गति प्रदान की गई है। इस साल के बजट में भी कई प्रविधान किए गए हैं, जिनका दीर्घकालिक उद्देश्य वर्ष 2047 तक भारत को शिपबिल्डिंग क्षेत्र में वैश्विक महारथी बनाने का है।

मैरिटाइम डेवलपमेंट फंड यानी एमडीएफ जैसी पहल इन प्रयासों के केंद्र में है। सरकार जहां 25,000 करोड़ रुपये के इस कोष में 49 प्रतिशत का योगदान करेगी तो शेष राशि बंदरगाहों एवं निजी क्षेत्र के साझेदारों के जरिये आएगी। इस कोष के जरिये शिपबिल्डिंग और जहाजों की मरम्मत सुविधाएं विकसित करने के लिए दीर्घकालिक एवं किफायती पूंजी उपलब्ध होगी। इस पहल को नवगठित शिपबिल्डिंग फाइनेंशियल असिस्टेंस पालिसी से और मदद मिलेगी। इस योजना में 18,090 करोड़ रुपये के अंशदान से भारतीय शिपबिल्डिंग उद्योग को लागत प्रतिस्पर्धा की चुनौती से उबारने की तैयारी है। इसी कड़ी में एक निर्धारित सीमा से बड़े जहाजों को इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का दर्जा दिया जाएगा। इससे उन्हें आसान वित्तीय संसाधन उपलब्ध होने के साथ उनकी अन्य बाधाएं दूर होंगी। सरकार ने घरेलू रिसाइक्लिंग उद्योग को बढ़ावा देने एवं देश में बने जहाजों की खरीद को बढ़ावा देने के लिए शिपब्रेकिंग क्रेडिट नोट स्कीम का एलान भी

किया है। बजट में भी सार्वजनिक निजी भागीदारी-पीपीपी के तहत विशाल शिपबिल्डिंग क्लस्टर के निर्माण की राह तैयार की गई है।

इन नीतिगत प्रयासों के जमीनी स्तर पर परिणाम भी नजर आने लगे हैं। केरल सरकार ने विंझिम पोर्ट के निकट पूवार में एक भीमकाय डीप-वाटर शिपबिल्डिंग एंड रिपेयर फैसिलिटी का विचार आगे बढ़ाया है। यह विशालकाय जहाजों को संभालने के साथ ही निकटवर्ती अंतरराष्ट्रीय शिपिंग लेंस का लाभ उठाने में भी मददगार होगा। इसी कड़ी में दुनिया की दिग्गज शिपबिल्डिंग निर्माता कंपनियों में से एक एचडी हुंडई हेवी इंडस्ट्रीज तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में नए शिपयार्ड की संभावनाएं तलाशने में लगी है। कंपनी का प्रतिनिधिमंडल एलएंडटी जैसी घरेलू दिग्गज के साथ निर्णायक बातचीत के दौर में है। इस मोर्चे पर बात बनते ही कंपनी अपनी महारत से भारत को लाभ पहुंचाएगी।

भारतीय नौसेना का लक्ष्य वर्ष 2035 तक 200 युद्धपोतों का बेड़ा तैयार करने का है, लेकिन इस दिशा में प्रगति अभी बहुत धीमी है। इसे इससे भी समझा जा सकता है कि अभी 41 पोत और पनडुब्बियां निर्माणाधीन हैं और उनके निर्माण के लिए भी हमें विदेशी इंजन, रडार और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की आवश्यकता होती है। यह निर्भरता नाजुक वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के दौर में और मुश्किलें पैदा कर सकती है। इसलिए भारत को प्रत्येक मोर्चे को साधकर पोत निर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करनी ही होगी।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



राजनीतिक दल कैसे अपना रुख और रंग बदलते हैं इसका उदाहरण हैं ईवीएम और आधार



@ रिकू विश्वकर्मा

हम ऐसा कहते नहीं अघाते कि वैशाली विश्व का प्रथम गणतंत्र था, जहां सभी फैसले लोकतांत्रिक तरीके से होते थे। सचमुच वैशाली में ढाई हजार साल पहले ऐसा ही होता था। इसी कारण हम यह भी कहते हैं कि भारत लोकतंत्र की जननी है। वैशाली को भगवान महावीर और भगवान बुद्ध की कर्मस्थली के रूप में भी जाना जाता है। वैशाली ने जो तौर-तरीके अपनाए, वही काफी कुछ बाद में दुनिया के लोकतांत्रिक देशों ने अपनाए, जैसे शासक का चुनाव जनता की ओर से किया जाना और समस्याओं के समाधान के लिए सभा-समितियों का गठन करना।

अतीत पर गर्व किया जाना स्वाभाविक

वैशाली के गौरवशाली अतीत पर गर्व किया जाना स्वाभाविक है, लेकिन इस पर कम ही चर्चा होती है कि वैशाली गणराज्य का पतन क्यों हुआ? पतन इसलिए हुआ, क्योंकि समय के साथ हर समस्या पर अंतहीन बहस होती। कहीं कोई सहमति नहीं बनती और सहमति के अभाव में समस्याओं का समाधान भी नहीं होता। स्थिति यह आ गई कि वैशाली के सुरक्षा उपायों पर भी केवल बहस ही होती। एक तरह से लोकतंत्र की अति हो गई, असहमतियां कलह में बदल गईं और नौबत यह आ गई कि वैशाली का समाज और उसका सुरक्षा तंत्र कमजोर पड़ गया।

वैशाली को छिन्न-भिन्न कर दिया

अवसर देखकर मगध नरेश ने उस पर आक्रमण कर दिया और वैशाली को छिन्न-भिन्न कर दिया। वैशाली से भागे कुछ लोग भगवान बुद्ध के पास पहुंचे और उन्होंने सारा किस्सा बयान किया। वह कुपित हुए और उन्होंने कहा कि वैशाली की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी। इसी कारण भारत ने जब अपना पहला परमाणु परीक्षण किया तो उसका कूट नाम दिया-बुद्ध मुस्कराए। अब जरा देखें कि आज के भारतीय गणतंत्र में लोकतंत्र के नाम पर क्या हो रहा है?

पहलगाम की भीषण आतंकी घटना के बाद जब पाकिस्तान से तनाव चरम पर है और उसके चलते नागरिक सुरक्षा अभ्यास होने जा रहा है, तब पंजाब और हरियाणा की सरकारें पानी के बंटवारे को लेकर एक-दूसरे के खिलाफ आग उगल रही हैं। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह ने जिन माओवादियों को आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा कहा था, उनके खिलाफ जारी सुरक्षा बलों के अभियान को रोकने की अपील की जा रही है।

फालतू प्रस्ताव पारित कर रही विधानसभा

जिस वक्फ कानून पर सुनवाई 15 मई तक के लिए टल गई, उसके खिलाफ कुछ विधानसभाएं इस आशय के फालतू प्रस्ताव पारित कर रही हैं कि वे इस कानून को लागू नहीं करेंगी। ऐसे ही प्रस्ताव कृषि कानूनों के खिलाफ भी पारित किए गए थे और नागरिकता संशोधन कानून के

खिलाफ भी। जब इन दोनों कानूनों का अराजक तरीके से विरोध करने वाले रास्ता रोककर बैठ गए थे तब न सरकार ने कुछ किया और न ही सुप्रीम कोर्ट ने।

भले ही सुप्रीम कोर्ट वक्फ कानून पर स्थगनादेश देते-देते रह गया हो, लेकिन उसने कृषि कानूनों की समीक्षा किए बिना ही उनके अमल पर रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट को वर्षों पुराने मामलों को सुनने का वक्त नहीं मिलता, लेकिन वह कुछ मामलों को तुरंत हाथ में ले लेता है। वक्फ कानून इधर संसद से पारित हुआ, उधर सुप्रीम कोर्ट उसकी सुनवाई के लिए बैठ गया।

आम सहमति की आवश्यकता हर समय होती है, लेकिन सबसे अधिक होती है संकट के समय। पहलगाम हमले के बाद राजनीतिक आम सहमति न केवल कायम होनी चाहिए थी, बल्कि दिखनी भी चाहिए थी। यह कैसे दिखाई जा रही है, इसका एक उदाहरण कांग्रेस के एक नेता की ओर से राफेल विमान को नीबू-मिर्ची लेकर उड़ाना है। पहले राष्ट्रीय महत्व के हर मसले पर आम सहमति देखने को मिलती थी, क्योंकि राजनीतिक मतभेदों का मतलब शत्रुतापूर्ण संबंध नहीं होते थे। अब ऐसा ही है।

यह शत्रु भाव केवल डिजिटल संसार में ही नहीं, समाज में भी झलकता है। हाल के इतिहास में केवल दो बार राजनीतिक सहमति देखने को मिली है। एक बार न्यायिक नियुक्ति आयोग कानून बनाते समय और दूसरी बार जीएसटी कानून के वक्त। न्यायिक नियुक्ति वाले कानून को सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक बता दिया और

जीएसटी को कांग्रेस ने गब्बर सिंह टैक्स नाम दे दिया। इसके बाद से किसी भी मसले पर राजनीतिक सहमति के दर्शन दुर्लभ हैं।

जो दल इन दिनों संविधान की प्रतियां लहरा रहे हैं, वे इसी संविधान में उल्लिखित समान नागरिक संहिता का नाम सुनते ही बिदक जा रहे हैं। जो कांग्रेस लंबे समय तक लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराती रही, वही यह रट लगाए है कि अब ऐसा कराना असंवैधानिक होगा। राजनीतिक दल कैसे अपना रुख और रंग बदलते हैं, इसका उदाहरण हैं ईवीएम और आधार।

जिस ईवीएम को कांग्रेस ने अपनाया, वही उसके खिलाफ अभियान छेड़े रहती है। जब आधार अमल में लाया जा रहा था तो भाजपा को फूटी आंख नहीं सुहा रहा था, लेकिन अब जब वह उसका अधिकाधिक उपयोग करना चाहती है तो कांग्रेस को रास नहीं आ रहा है। आधार से स्मरण हो आया कि अनगिनत बांग्लादेशी बंगाल के जरिये आधार हासिल कर देश भर में बसते जा रहे हैं।

इन अवैध बांग्लादेशियों की पहचान करने और उन्हें निकालने पर सबसे अधिक आपत्ति उन ममता बनर्जी को है, जिन्होंने एक समय बंगाल में उनकी घुसपैठ को लेकर लोकसभा में आसमान सिर पर उठा लिया था। ऐसी हरकतें लोकतंत्र को विफलता की ओर ले जाती हैं और शायद वैसे ही हालात पैदा करती हैं, जैसे वैशाली में पैदा हो गए थे और जिनके नतीजे में उसका पतन हुआ।

@ आनंद मीणा

केंद्र सरकार की ओर से अप्रैल 2015 में शुरू की गई प्रधानमंत्री मुद्रा योजना यानी पीएमएमवाई ने पिछले एक दशक में भारतीय महिलाओं के जीवन पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला है। यह रिपोर्ट बताती है कि मुद्रा योजना के प्रभाव से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के ऋण प्रवाह में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ध्यान रहे कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना को आरंभ करने का मूल उद्देश्य माइक्रोफाइनेंस ऋण को औपचारिक रूप देते हुए हाशिए पर खड़े लोगों को सहजता से ऋण प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध कराना था। इन दस वर्षों में मुद्रा योजना ने भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार देने में ही अपनी भूमिका नहीं निभाई, बल्कि महिला सशक्तीकरण की एक नवीन पटकथा भी लिखी है। यह निर्विवाद है कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था तब तक सुदृढ़ नहीं हो सकती, जब तक कि उसमें आधी आबादी की सहभागिता न हो। इसमें दोराय नहीं कि विगत दशक में देश में मजबूत सरकारी नीतियों एवं योजनाओं का ढांचा निर्मित किया गया है, जिससे न केवल भारत की अर्थव्यवस्था की मूल विशेषता यानी कुटीर एवं लघु उद्योगों को बल मिला है, बल्कि देश की आधी आबादी भी आर्थिक सशक्तता का नवीन अध्याय लिखने को उन्मुख हुई है। एमएसएमई क्षेत्र न केवल आर्थिक विकास की गति को तीव्रता देते हैं, अपितु वे महिला सशक्तीकरण के महत्वपूर्ण वाहक भी हैं। प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया और स्टैंड अप इंडिया भारत की अर्थव्यवस्था को एक सुदृढ़ ढांचा प्रदान कर रहे हैं, जिससे एमएसएमई क्षेत्र भारत की आर्थिक प्रगति की आधारशिला बनकर उभरा है।

हाल के वर्षों में राष्ट्रीय आर्थिक उत्पादन में एमएसएमई की हिस्सेदारी 2021-22 के 28.6 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 30.01 प्रतिशत हो गई, जो अर्थव्यवस्था में इसकी बढ़ती भूमिका को उजागर करती है। एमएसएमई से निर्यात में भी पर्याप्त बढ़ोतरी देखी गई है, जो वित्त वर्ष 2020-21 में 3.95 लाख करोड़ से बढ़कर 2024-25 में 12.39 लाख करोड़ हो गई। एमएसएमई के लिए मुद्रा योजना एक जीवनरेखा बनकर उभरी है। बीते वर्ष जारी अपनी एक रिपोर्ट में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी पुष्टि की थी कि पीएमएमवाई जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उद्यमिता के लिए भारत का सक्षम नीतिगत परिवेश ऋण तक पहुंच के माध्यम से स्वरोजगार बढ़ाने में सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात है एमएसएमई में देश की महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति। इसका सबसे बड़ा कारक उनकी ऋण तक सहज पहुंच का होना है। एसबीआई की रिपोर्ट बताती है कि बैंक के कुल ऋण में एमएसएमई की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2013-14 में 15.8 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में लगभग 20 प्रतिशत हो गई। इस विस्तार ने छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्र में व्यवसायों को वित्तीय सहायता तक पहुंचने में सक्षम बनाया, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था सशक्त हुई है। मुद्रा योजना के कुल लाभार्थियों में 68 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो देश भर में महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्योगों को आगे बढ़ाने में इस योजना की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। वित्त वर्ष 2015-16 से 2024-25 के बीच प्रति महिला प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की वितरण राशि वर्ष दर वर्ष 13 प्रतिशत से बढ़कर 62,679 रुपये तक पहुंच गई, जबकि प्रति महिला वृद्धिशील जमा राशि वर्ष दर वर्ष 14 प्रतिशत बढ़कर 95,269 रुपये हो गई।

आखिर महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यम क्यों आर्थिकी के मजबूत चालक के रूप में देखे जा रहे हैं? इसका उत्तर

महिला सशक्तीकरण का नया दौर!



वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की 'एडवांसिंग जेंडर पैरिटी इन आंत्रप्रेन्योरशिप स्ट्रेटेजी फार ए मोर इक्वेटेबल फ्यूचर' नामक रिपोर्ट देती है। उसके अनुसार महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय विविध दृष्टिकोण लाते हैं, समावेशी नेतृत्व को बढ़ावा देते हैं और अक्सर सामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन न केवल विकास को गति देता है, अपितु निर्धनता और असमानताओं को भी कम करता है। इतना ही नहीं, बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार

करता है। पुरुषों की तुलना में महिलाएं अपेक्षाकृत अपनी आय का अधिक हिस्सा परिवार एवं समुदाय के उन्नयन पर खर्च करती हैं। कोविड काल में भी पीएमएमवाई योजना के जरिये महिला उद्यमियों ने बचत जारी रखी। बचत की यही प्रवृत्ति देश के बड़े आर्थिक लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक होती है।

भारत की अर्थव्यवस्था पर महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। महिला उद्यमी न केवल आर्थिक विकास को गति दे रही हैं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढ़ा रही हैं। भारत में

महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यम दो करोड़ 70 लाख से अधिक लोगों को रोजगार देते हैं, जो रोजगार सृजन और समग्र आर्थिक विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का स्पष्ट प्रमाण है। बैंक एंड कंपनी की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 1.57 करोड़ महिला संचालित उद्यम हैं, जो कुल उद्यमशीलता परिदृश्य का 22 प्रतिशत है। उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत पुरुषों से करीब 19.5 प्रतिशत पीछे चल रहीं महिलाओं की संख्या स्वतः स्पष्ट कर रही है कि आने वाले समय में भारत की अर्थव्यवस्था का नेतृत्व महिलाएं करेंगी।

लंबे समय से संदिग्ध ही रहा है विश्व बैंक, आइएमएफ और डब्ल्यूटीओ का अपने उद्देश्यों के प्रति वास्तविक समर्पण



हालिया सैन्य टकराव के दौरान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के कार्यकारी बोर्ड ने पाकिस्तान को 1.4 अरब डालर का नया लोन भारत के कड़े विरोध के बावजूद दे दिया। इसके साथ ही उसने एक्सटेंडेड फंड फैसिलिटी (ईएफएफ) के तहत मिल रहे करीब 60 हजार करोड़ रुपये की मदद की पहली समीक्षा को भी मंजूरी दी।

इससे पाकिस्तान को अगली किस्त के करीब 8,542 करोड़ रुपये मिलेंगे। आइएमएफ बोर्ड बैठक में भारत ने पाकिस्तान को दी जा रही राशि पर चिंता जताते हुए कहा था कि इस फंड का दुरुपयोग वह आतंकवादी उद्देश्यों के लिए कर सकता है। भारत से सैन्य टकराव के बीच आइएमएफ का यह निर्णय फंडिंग एजेंसियों और दानदाताओं की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है और वैश्विक मूल्यों का मजाक उड़ाता है। यह आइएमएफ के उस निर्णय के भी ठीक विपरीत है, जिसमें फरवरी 2022 में रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के बाद आइएमएफ ने उसके साथ अपने वार्षिक परामर्श को रोक दिया था। खेद की बात है कि इस बार वह इतना भी नहीं कर सका।

सुधार के लिए कई बार आवाज उठाई गई

संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आइएमएफ और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सुधार के लिए कई बार आवाज उठाई गई है, क्योंकि बदलते परिवेश में ये अपनी प्रासंगिकता खोते जा

रहे हैं। विश्व बैंक, आइएमएफ और डब्ल्यूटीओ का अपने उद्देश्यों के प्रति वास्तविक समर्पण लंबे समय से संदिग्ध ही रहा है। रूस-यूक्रेन और इजरायल-हमास युद्धों के साथ-साथ बढ़ती वैश्विक समस्याओं के कारण संयुक्त राष्ट्र जैसा संगठन भी अपने उद्देश्यों में नाकाम रहा है।

दुनिया में यह भावना बढ़ रही है कि एक संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र लगातार अप्रभावी होता जा रहा है। आइएमएफ की स्थापना 1944 में ब्रेटनवुड्स सम्मेलन में नेक इरादों के साथ गई थी। आज इसके सदस्य देशों की संख्या 191 है। पिछले कुछ वर्षों में आइएमएफ अपनी भूमिका से न्याय नहीं कर पाया है। आइएमएफ 2008 के वित्तीय संकट की निगरानी और उसका आकलन करने में भी पूरी तरह विफल रहा था, जबकि लेहमैन ब्रदर्स के पतन से कुछ दिन पहले ही ऐसी आशंका बढ़ चुकी थी। आइएमएफ ने शायद ही कभी किसी भी संकट से निपटने की वैश्विक अर्थव्यवस्था की क्षमता के बारे में आशावादी रुख दिखाया हो।

नए कर्ज के दुरुपयोग का खतरा अधिक

पाकिस्तान 35 वर्षों में 28 बार आइएमएफ से मदद ले चुका है। अगर पहले दिए गए कर्ज का पाकिस्तान ने सही उपयोग किया होता, तो उसे बार-बार मदद की जरूरत नहीं पड़ती। इसलिए अब फिर नया लोन दिया जाना आइएमएफ की मंशा के साथ-साथ उसकी निगरानी पर भी सवाल खड़े करता है।

निश्चय ही नए कर्ज के दुरुपयोग का खतरा अधिक है। आइएमएफ के बड़े कर्जदार देशों में पाकिस्तान चौथे नंबर पर है, जिससे उसने 8.3 अरब डालर का कर्ज ले रखा है।

संयुक्त राष्ट्र की 2021 की रिपोर्ट स्पष्ट संकेत करती है कि पाकिस्तान में चुनी हुई सरकार के बावजूद वहां के कामकाज में सेना का पूरा हस्तक्षेप रहता है। सेना वहां की अन्य अनेक नीतियों के साथ आर्थिक नीतियों को भी प्रभावित करती है। यदि पाकिस्तान ने आइएमएफ की मदद का विकास कार्यों में उपयोग किया होता, तो पाकिस्तान मानव विकास सूचकांक में 193 देशों में 168वें स्थान पर नहीं होता।

इस वक्त पाकिस्तान का हर बच्चा अपने सिर पर करीब 85 हजार रुपये का कर्ज लेकर पैदा होता है। पाकिस्तान में वेतन और सब्सिडी जैसे खर्च से लेकर तेल और गैस का आयात बिल तक सब कुछ कर्ज पर चल रहा है। पाकिस्तान का सार्वजनिक ऋण उसकी जीडीपी का 69.4 प्रतिशत हो गया है।

आइएमएफ का उद्देश्य विश्व की सभी मुद्राओं को स्थिर रखने और मुक्त व्यापार की सुविधा देना था, परंतु दुर्भाग्य से पिछले कई वर्षों से आइएमएफ इन उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पा रहा है। उसके पास गलत परियोजनाओं के लिए जवाबदेही का भी अभाव है। कर्ज में डूबे देशों द्वारा डिफॉल्ट को रोकने के लिए नए ऋण देने की आइएमएफ की नियमित प्रथा एक नैतिक जोखिम पैदा करती है।

इसीलिए भी आइएमएफ की प्रणाली पर कड़ी निगाह रखने के साथ उसमें आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

बोर्ड की बैठकों और वोटिंग में अधिक पारदर्शिता लाना भी जरूरी

विश्व बैंक और आइएमएफ को आंतरिक न्याय, जवाबदेही और निगरानी कार्यों का पुनर्गठन भी करना चाहिए। बोर्ड की बैठकों और वोटिंग में अधिक पारदर्शिता लाना भी जरूरी है। वैश्वीकरण और संघर्ष समाधान के नए तरीकों से जुड़ा रहे विश्व में इन संगठनों की भूमिका पर लगातार प्रश्न उठ रहा है। ज्यादातर संगठन अपने उद्देश्यों में असफल साबित हो रहे हैं।

यदि उन्हें समाप्त नहीं किया जा सकता तो उनमें व्यापक सुधार तो जरूर किया जाना चाहिए। आइएमएफ को फंड देने के तरीकों में सुधार शुरू करने का यही सही समय है। इसके साथ ही बेलआउट कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की भी समीक्षा करनी होगी। 2023 में भारत की अध्यक्षता में हुई जी 20 बैठक के दौरान आइएमएफ सहित अन्य बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार पर बात हुई थी। दुनिया को सोचना होगा कि संयुक्त राष्ट्र, आइएमएफ, विश्व बैंक आदि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में निवेश की गई वित्तीय और बौद्धिक पूंजी का विश्व भर के लोकतांत्रिक देशों को इनके पारदर्शी कार्यों की पहले से कहीं ज्यादा जरूरत है।

हर भारतीय का खून खौल रहा

प्रधानमंत्री ने पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले के संदर्भ में यह कहकर देश के लोगों के मन की पीड़ा बयान की है कि इस घटना से हर भारतीय का खून खौल रहा है। निश्चित रूप से ऐसा ही है। पहलगाम का हमला इतना वीभत्स है कि लोग गुस्से से भरे हुए हैं और अपनी-अपनी तरह से उसकी अभिव्यक्ति भी कर रहे हैं। यह अच्छा हुआ कि प्रधानमंत्री ने पीड़ित परिवारों को यह भरोसा दिलाया कि न्याय मिलकर रहेगा और हमले को अंजाम देने और उसकी साजिश रचने वालों को कठोरतम जवाब दिया जाएगा। ऐसा किया जाना समय की मांग है। पाकिस्तान को सबक सिखाया ही जाना चाहिए, लेकिन यह काम सोच-विचार करके इस तरह किया जाना चाहिए कि वह फिर कभी ऐसा दुस्साहस न कर सके। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि उड़ी में आतंकी हमले के बाद सीमा पार जो सर्जिकल स्ट्राइक की गई, उससे यह लगा कि पाकिस्तान सही रास्ते पर आ जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसके कुछ वर्षों बाद उसने पुलवामा में भारतीय सुरक्षा बलों को निशाना बनाया। इसके जवाब में पाकिस्तान के खिलाफ एयर स्ट्राइक की गई। इससे पाकिस्तान सहमा अवश्य, लेकिन पहलगाम में उसकी करतूत यह बता रही है कि वह आसानी से भारत के प्रति अपनी घृणा का परित्याग करने वाला नहीं है। स्पष्ट है कि पाकिस्तान को इतनी गहरी चोट दी जानी चाहिए कि वह उससे उबर न सके। देश इसकी प्रतीक्षा कर रहा है, लेकिन पाकिस्तान को सबक सिखाए जाने को लेकर प्रतीक्षारत देश के लोगों से यह अपेक्षित है कि वे एकजुटता का परिचय दें, क्योंकि एकजुट देश ही शत्रुओं के दुस्साहस का दमन करने में सहायक होगा। पहलगाम में हमले के पीछे पाकिस्तान का एक मकसद देश की एकजुटता को प्रभावित करना है। यह संतोषजनक है कि पाकिस्तान को जवाब देने के मामले में राजनीतिक वर्ग एकमत नजर आया है, लेकिन सर्वदलीय बैठक में जो सहमति बनी, उसे कायम रखना भी आवश्यक है। यह ठीक नहीं कि पहलगाम हमले को लेकर कई नेताओं के गैरजिम्मेदाराना बयान आ रहे हैं। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर ने जिस तरह यह कहा कि यह हमला विभाजन के अनसुलझे सवाल का परिणाम है, उससे तो पाकिस्तान के दूषित चिंतन की ही झलक मिलती है। उन्होंने भारतीय मुसलमानों को लेकर जो टिप्पणी की, उसे भी पाकिस्तान अपने पक्ष में भुनाए तो हैरानी नहीं। यदि एक क्षण के लिए मान भी लिया जाए कि मणिशंकर अय्यर कांग्रेस में कोई हेंसियत नहीं रखते और वह रशिये पर पड़े हुए हैं तो भी यह प्रश्न उठता है कि आरिटर कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को क्या हुआ है। समझना कठिन है कि उन्होंने अपनी ही पार्टी के शीर्ष नेताओं की राय के खिलाफ खड़े होना क्यों पसंद किया। अच्छा हो कि वह तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से कुछ सीखें।

बजरंग मुनि

आकाशवाणी की अपनी विश्वसनीयता

@ अनुराग पाठक

सच ही कहा है कि अति उत्साह में कभी भी संयम नहीं खोना चाहिए। ऑपरेशन सिन्दूर और उसके बाद की हालातों को जिस तरह से टीवी चैनलों द्वारा सनसनीखेज बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है भले ही इससे इन चैनलों की टीआरपी में बढ़ोतरी हो जाए पर यह किसी भी हालत में एक जिम्मेदार मीडिया की भूमिका नहीं हो सकती। आज देशवासी सही तस्वीर देखने को तरस गए हैं। कोई चैनल पाकिस्तान के किसी स्थान पर कब्जे की बात करता है तो कोई चैनल पाकिस्तान की सीमाओं में भारतीय सेना के प्रवेश की बात करता है। कोई चैनल कुछ और सनसनीखेज तस्वीर बताता है। यह सब ऑपरेशन सिन्दूर के अगले दिन रात के प्रसारणों से खासतौर से देखने को मिला। ठीक है देशभक्ति का जज्बा है और ऑपरेशन सिन्दूर से प्रत्येक देशवासी अपने आप को गर्वान्वित महसूस कर रहा है। हमारी सेना, हमारे सैनिकों और राजनीतिक नेतृत्व को लेकर प्रत्येक देशवासी में अति उत्साह और लबालब विश्वास है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इस दौर में देश के प्रिन्ट मीडिया ने अपनी भूमिका सही तरीके से निभाई है। सवाल यही है कि क्या चैनलों या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एकमात्र उद्देश्य गंभीर से गंभीर मुद्दे को सनसनीखेज ही बनाना है। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि केन्द्र सरकार को बार बार एडवाइजरी जारी करनी पड़ रही है तो आमजन समझ ही नहीं पा रहे कि वास्तविकता क्या है?

एक समय था जब आकाशवाणी की अपनी विश्वसनीयता रही। सरकारी प्रसारण होने के बावजूद घड़ी का समय मिलाने से लेकर नियतकालीन न्यूज प्रसारण समय पर लोग सब कुछ काम छोड़कर या फिर चौराहे की पान-चाय की दुकान पर जम जाते थे। प्रातः 8 बजे, रात पौने नौ बजे व स्थानीय समाचारों के लिए निर्धारित समय पर लोग समाचार सुनने का बेसब्री से इंतजार करते थे। विश्वसनीयता यह कि सरकार विरोधी आंदोलनकारी भी सरकारी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित समाचारों पर पूरा पूरा विश्वास करते थे। यही कारण था कि समाचारों की विश्वसनीयता होती थी। दूरदर्शन का आंशिक दौर भी इसी तरह का रहा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन समाचारों की वह गौरवशाली परंपरा इतिहास की बात हो गई है। 1956, 1962 या 1971 का युद्ध हो सभी की निगाहें समाचार बुलेटिनों पर रहती थी तो समय की मांग को देखते हुए देशभक्ति पूर्ण गीतों, कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता था। समय का बदलाव देखिये कि टीवी चैनलों की टीआरपी दौड़ सत्य दिखाने

के स्थान पर भ्रम का जाल बुनने लगती है। सोशियल मीडिया पर यह आरोप आम है पर समाचार टीवी चैनल तो दो कदम आगे हो गए हैं।

समूचे देश के लिए गर्व की बात है कि आज सरहद के मोर्चे पर हो या कूटनीतिक मोर्चे पर हमारी रणनीति पूरी तरह से सफल है। हमारी सेना और सैनिक पाकिस्तान के हर कूटरचित कदमों को विफल करने में सफल हो रही है। पाकिस्तान द्वारा सीमावर्ती इलाकों और नागरिक क्षेत्रों में की जा रही सैन्य गतिविधियों को अंजाम देने के कुत्सित प्रयासों को पूरी तरह से विफल किया जा रहा है वही लगभग सभी द्रोण हमलों को विफल किया जा रहा है।

पाकिस्तान अब पूरी तरह कुंठित देश हो गया है और आज तुर्की और चीन को छोड़कर कोई देश पाकिस्तान के पक्ष में आने को तैयार नहीं है। पहलगाम की घटना के बाद से पाकिस्तान एक के बाद एक गलतियां कर रहा है और आतंकवादी के जनाजे में सैनिकों द्वारा शामिल होना उसके आतंकवादियों से जुड़ाव को स्पष्ट कर देता है। अब पाकिस्तान ने अपनी तरफ से इकतरफा भारत के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी गई है अपितु परमाणु बम विस्फोट की धमकी दी जा रही है। पर जिस संयमित तरीके से भारत द्वारा पाकिस्तान के हर आक्रमण और कदम को विफल किया जा रहा है वह देश के लिए गर्व की बात है। आज पाकिस्तान का हर कदम उसके लिए आत्मघाती होता जा रहा है। बलूचियों को अलग अवसर मिल गया है तो पीओके में पाकिस्तान के विरोध को भी मुखर होने का अवसर मिल गया है।

जब युद्ध जैसे हालात हो तो ऐसे में सबसे पहली आवश्यकता जिम्मेदार रिपोर्टिंग की हो जाती है। मीडिया को ऐसे सभी कदमों से बचना जरूरी हो जाता है। सबसे महत्वपूर्ण यह हो जाता है कि हमारी अतिउत्साह की रिपोर्टिंग दुश्मन देश के लिए सहायक ना बन जाए यह जरूरी हो जाता है। यही कारण है कि सरकार एडवाइजरी जारी करते हुए सेना के मूवमेंट व अन्य सामरिक सूचनाओं से दूरी बनाये रखने की सलाह दी जा रही है। दरअसल जिस तरह से ऑपरेशन सिन्दूर के बाद पाकिस्तान द्वारा द्रोण हमलों का दौर चलाया और उनके द्रोण हमलों को नाकाम किया गया वहां तक तो सब ठीक रहा पर ब्रेकिंग के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा था वह जिम्मेदार मीडिया की भूमिका नहीं कहा जा सकता। ऐसे में टीवी चैनलों को संयम और जिम्मेदारी से काम करना होगा। हमें पाकिस्तानी प्रोपेगण्डा प्रचार से दूर रहते हुए रचनात्मक भूमिका निभानी होगी।

जुबानी तीर

“

यदि जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है, तो समर्थन योग्य है; और, यदि इसका उद्देश्य राजनीति और समाज को बांटना है, तो उसका सदैव ही विरोध।

- मोहन भागवत, संघ प्रमुख



“

इस देश में यदि कोई धर्मयुद्ध भड़काने का जिम्मेदार होगा, तो वह सुप्रीम कोर्ट और उसके न्यायाधीश ही होंगे!

- निशिकांत दुबे, भाजपा सांसद



“

व्यापार वार्ता में अमेरिका की तरफ से बेसैंट और ग्रीर शामिल हुए, जबकि चीन की तरफ से उप प्रधानमंत्री हे लिकेंग के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल शामिल हुआ।



-जेमिसन ग्रीर, अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि



प्राचीन वैदिक ग्रंथों में निहित आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट

@ डॉ महिमा मक्कर

आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट की एक समग्र और पारंपरिक प्रणाली है जिसकी उत्पत्ति 5,000 साल पहले भारत में हुई थी। प्राचीन वैदिक ग्रंथों में निहित, आयुर्वेद स्वास्थ्य और कल्याण को किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच संतुलन की स्थिति के रूप में देखता है। आयुर्वेदिक इलाज का मुख्य सिद्धांत इस संतुलन को बढ़ावा देना और बनाए रखना है, जिसे समग्र कल्याण के लिए आवश्यक माना जाता है।

आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट इस प्रकार हैं

आहार और पोषण

आयुर्वेद औषधि के रूप में भोजन को अत्यधिक महत्व देता है। आहार संबंधी सिफारिशें किसी व्यक्ति के दोष के अनुरूप होती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे ऐसे खाद्य पदार्थ खाएं जो संतुलन बनाए रखें या बहाल करें। उदाहरण के लिए, अधिक वात वाले व्यक्ति को गर्म, पौष्टिक खाद्य पदार्थों का सेवन करने की सलाह दी जा सकती है, जबकि अत्यधिक पित्त वाले व्यक्ति को ठंडा और शांत करने वाले खाद्य पदार्थों का चयन करना चाहिए।

हर्बल ट्रीटमेंट

आयुर्वेद जड़ी-बूटियों और पौधों के व्यापक फार्माकोपिया का दावा करता है। विशिष्ट स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान और दोषों को संतुलित करने के लिए हर्बल ट्रीटमेंट निर्धारित किए जाते हैं। आम आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों में हल्दी, अश्वगंधा, त्रिफला और पवित्र तुलसी शामिल हैं।

योग और ध्यान

योग और ध्यान आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट के अभिन्न अंग हैं। ये अभ्यास शरीर, मन और आत्मा को संरेखित करने, तनाव को कम करने और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। किसी व्यक्ति की शारीरिक संरचना के आधार पर विभिन्न योग मुद्राओं और ध्यान तकनीकों की सिफारिश की जा सकती है।

आयुर्वेदिक मालिश (अभ्यंग)

आयुर्वेदिक मालिश में किसी व्यक्ति के दोष के लिए विशेष रूप से चुने गए गर्म, हर्बल तेलों का उपयोग शामिल होता है। यह चिकित्सीय मालिश न केवल शरीर को आराम देती है बल्कि विषहरण और कायाकल्प में भी मदद करती है।

पंचकर्म

पंचकर्म आयुर्वेद में एक गहन विषहरण प्रक्रिया है। इसमें शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालने और संतुलन बहाल करने के लिए विरेचन (दुष्शोधन), बस्ती



(एनीमा), और नस्य (नाक से तेल देना) जैसी ट्रीटमेंटों की एक श्रृंखला शामिल है।

एक्यूंपक्चर और एक्यूप्रेशर

आयुर्वेद में शरीर में विशिष्ट ऊर्जा बिंदुओं को उत्तेजित करने और दोषों को संतुलित करने के लिए एक्यूंपक्चर और एक्यूप्रेशर के समान अभ्यास भी शामिल हैं।

जीवनशैली की सिफारिशें

संतुलित और सामंजस्यपूर्ण जीवन बनाए रखने के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सक नींद के पैटर्न, व्यायाम और मानसिक कल्याण प्रथाओं सहित दैनिक दिनचर्या का मार्गदर्शन करते हैं।

आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट के लाभ

आयुर्वेद केवल लक्षणों का इलाज करने के बजाय बीमारियों के मूल कारणों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस दृष्टिकोण से लंबे समय तक राहत मिलती है और समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है। आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट और ट्रीटमेंट आम तौर पर प्राकृतिक होते हैं और जड़ी-बूटियों और पौधों से प्राप्त होते हैं। इसका मतलब है कि सिंथेटिक दवाओं की तुलना में उनके दुष्प्रभाव न्यूनतम हैं।

एक अन्य लाभ वैयक्तिकरण है। आयुर्वेदिक चिकित्सक किसी व्यक्ति की विशिष्ट संरचना के अनुसार ट्रीटमेंट तैयार करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित देखभाल प्राप्त हो।

इसके अलावा, आयुर्वेद रोकथाम पर जोर देता है, जीवनशैली और आहार संबंधी सिफारिशों के माध्यम से

व्यक्तियों को अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद करता है। यह व्यक्तियों को सक्रिय रूप से अपनी भलाई पर नियंत्रण रखने में सक्षम बनाता है। आयुर्वेद न केवल शरीर में बल्कि मन और आत्मा में भी संतुलन को बढ़ावा देता है। योग और ध्यान जैसी प्रथाओं के माध्यम से, यह मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक स्थिरता और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है, कल्याण की समग्र भावना को बढ़ावा देता है।

आयुर्वेदिक ट्रीटमेंटों की सूची

अभ्यंग

आयुर्वेदिक तेल मालिश, किसी व्यक्ति के दोष के अनुरूप विशिष्ट हर्बल तेलों का उपयोग करना।

शिरोधारा

एक शांत चिकित्सा जिसमें तंत्रिका तंत्र को आराम देने के लिए माथे पर गर्म तेल की निरंतर धारा डाली जाती है।

पंचकर्म

एक व्यापक विषहरण प्रक्रिया जिसमें विरेचन (विरेचन), बस्ती (एनीमा), और नस्य (नाक से तेल डालना) जैसी चिकित्साएँ शामिल हैं।

आयुर्वेदिक हर्बल ट्रीटमेंट

विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए विशिष्ट जड़ी-बूटियों और हर्बल फॉर्मूलेशन का उपयोग।

आहार संबंधी परामर्श

संतुलन और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए किसी व्यक्ति के दोष के आधार पर वैयक्तिकृत आहार संबंधी सिफारिशें।

योग और प्राणायाम

दोषों को संतुलित करने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए अनुकूलित योग आसन और श्वास व्यायाम।

ध्यान और माइंडफुलनेस

मन को शांत करने, तनाव कम करने और मानसिक स्पष्टता में सुधार करने का अभ्यास।

उदवर्तन

त्वचा को एक्सफोलिएट और पुनर्जीवित करने के लिए हर्बल पेस्ट और पाउडर का उपयोग करके एक चिकित्सीय मालिश।

नेति

साइनस की समस्या से राहत के लिए सेलाइन घोल का उपयोग करके नाक की सफाई।

धारा

एक थैरेपी जिसमें विश्राम को बढ़ावा देने के लिए शरीर पर लगातार हर्बल तरल पदार्थ या काढ़े डालना शामिल है।

कटि बस्ती

एक स्थानीय ट्रीटमेंट जहां पीठ दर्द को कम करने के लिए पीठ के निचले हिस्से पर गर्म हर्बल तेल लगाया जाता है।

गंडूषा और कवला

मौखिक स्वास्थ्य और विषहरण के लिए मुंह धोना और तेल निकालना।

नाड़ी परीक्षा (पल्स डायग्नोसिस)

एक आयुर्वेदिक चिकित्सक नाड़ी का विश्लेषण करके किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य का आकलन करता है।

मर्म थैरेपी

अवरुद्ध ऊर्जा को मुक्त करने और ट्रीटमेंट को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट ऊर्जा बिंदुओं पर हल्का दबाव।

स्वेदन

पसीना लाने और विषाक्त पदार्थों को खत्म करने के लिए हर्बल स्टीम थैरेपी।

जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या मार्गदर्शन

दैनिक दिनचर्या, नींद के पैटर्न और व्यायाम के लिए सिफारिशें।

हर्बल स्टीम इनहेलेशन (नस्य)

नासिका मार्ग को साफ करने और श्वसन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए हर्बल स्टीम लेना।

रसायन

कायाकल्प चिकित्सा जिसका उद्देश्य जीवन शक्ति और दीर्घायु को बढ़ाना है।

कर्ण पुराण

कान के स्वास्थ्य और संतुलन में सुधार के लिए कान में तेल लगाना।

अरोमाथैरेपी

चिकित्सीय प्रयोजनों के लिए सुगंधित तेलों और जड़ी-बूटियों का उपयोग।

संत परंपरा का पुनरोदय ही उज्ज्वल भविष्य का आधार

संत शब्द सत् का एक रूप है। संत में सत्य का बोध होता है। संत सत्य के प्रति अनंत आस्था रखता है। एकनिष्ठ भाव से सत्य के सम्यक् दर्शन द्वारा अपने जीवन को ढालकर जीव और जगत् के प्रति आदर्श और व्यापक जीवन दृष्टि वाला व्यक्ति ही संत कहलाता है। संत का स्वरूप ईश्वर सदृश्य होता है। गुणों के आधार पर जिनमें भगवत्परायणता, निरपेक्षता, शान्ति, समदृष्टि, मोह का अभाव, अहंकारशून्यता, द्वंद्वहीनता और अपरिग्रह आदि गुण रहते हैं, वे संत कहलाते हैं। यही भगवान् के वंदे समाज में भगवद्भक्ति का प्रचार करते हैं। यह प्रचार भिन्नभिन्न रूपों में होता है। जिसे कई परंपराओं के रूप में देखा जा सकता है।

‘षण्’ धातु ‘तन’ प्रत्यय से संयुक्त होकर संत शब्द को बनाती है। जिसका अर्थ होता है, लोगों के प्रति अनुग्रहकारी होना। लोकानुग्रह तत्त्व तो सामान्यजनों में भी पाए जाते हैं। पाणिनी के अष्टाध्यायी सूत्र के अनुसार संतों में ब्रह्मानंदसंपन्न व्यक्ति होते हैं। यही विशिष्टता एवं विशेषता संत को सामान्यजन से पृथक् करती है। संत का प्रयोग विनयशीलसंपन्न साधु पुरुष के लिए किया जाता है। अपने विशिष्ट अर्थ में संत भगवत् अर्पित व्यक्ति होते हैं। संत वही है जिन्होंने सत्य की सम्यक् अनुभूति की है और उसी के प्रति सहजभाव से आस्थावान् होकर लोकरंजक जीवन दर्शन दिया है।

तैत्तिरीय संहिता के ब्रह्मावली खंड में उल्लेख मिलता है कि संत ब्रह्मा के अस्तित्व को साकार रूप प्रदान करता है। संतों के जीवन में आत्मा के आठ गुणों का विकास होता है। इन आठ गुणों का वर्णन गौतम स्मृति में इस तरह मिलता है, “दया सर्वभूतेषु वाँतिरनुसूया शोचम नायासे मंलमकार्पण्यमस्पृहा।”

बृहस्पति स्मृति के अनुसार, क्षमा, असूया, शौच, मंगल कार्य करना, अकार्पण्य आदि को नियमित रूप से पूर्ण करने वाला ही संत है। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय सखा उद्धव को समझाते हुए संतों के लक्षण की ओर संकेत किया है, “मैंने वेदों और शास्त्रों के रूप में मनुष्य के धर्म का उपदेश दिया है। उनके पालन से अंतःकरण की शुद्धि होती है, आत्मा पवित्र होता है और उल्लंघन से रोरव नरक जैसा दुःखकष्ट मिलता है। परंतु मेरा जो भक्त उन्हें भी अपने ध्यान आदि में विक्षेप समझकर त्याग देता है और केवल मेरी भक्ति में लगा रहता है वही परम संत है।” श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने संतों की चर्चा करते हुए कहा है कि जो सुख और दुःख दोनों को समान भाव से देखता है एवं ग्रहण करता है, जिसे अपने मानअपमान, स्तुति एवं निंदा की चिंता नहीं रहती और जो सदैव धैर्यपूर्वक निष्काम भाव से काम करता है, वही संत है।

कबीर, दादू, रज्जब आदि ने संत को सत्त्वस्य योगी कहा है। जड़ीभूत चिदात्मा जब परम सत्य का दिव्य दर्शन करता है, तो वह आनंद और उल्लास में निमग्न हो जाता है, इसी अवस्था में पहुँचा हुआ पुरुष सत्त्वस्य योगी होता है। ऐसे पुरुष सदा परमात्मा के परम भाव में निवास करते

हैं। संसार उन्हें अपने सतरंगी आकर्षण में बाँध नहीं पाता। वे जगत् के जड़ तत्त्वों के मनोहारी एवं मधुमय आकर्षण में नहीं फँसते। वे सभी आकर्षण, आकांक्षा, इच्छा आदि से परे होते हैं। उनकी चेतना इनसे परे परमात्म चेतना के संग एकीभूत रहती है। उनकी आवश्यकता अपनी आवश्यकता नहीं होती और न उनकी स्वयं की इच्छा होती है। परिणामतः संतों की आत्मा ऊर्ध्वमुखी होती है। संतों की व्यापक दृष्टि का मूल रहस्य उनकी आत्मा का ऊर्ध्वमुखी विकास ही है। संत कबीर आदि से ‘स्व’ के परित्याग द्वारा आत्मा के ऊर्ध्वमुखी विकास को संत का लक्षण माना है।

सगुण भक्तिधारा के संत तुलसीदास ने रामचरितमानस में संतों के दिव्य स्वरूप का वर्णन किया है। संतों की उनकी इस व्याख्या में एक ओर स्फटिक की सुंदरता है, तो दूसरी ओर मोती के आब की तरलता। तुलसी का संत स्वरूप उदात्त, निर्मल और पावन है। उनके अनुसार जिसके अंतःकरण में ‘स्व’ की भावना का विसर्जन हो गया वही संत में राग उस समय गलता है, जब वह स्वयं को परमार्थ के लिए उत्सर्ग कर देता है। उसके उत्सर्ग में प्रतिदान नहीं, बलिदान की भावना रहती है। प्रतिग्रह न होकर आत्मसमर्पण होता है, लेने का नहीं लुटा देने का भाव प्रधान होता है। संत औरों के लिए स्वयं को लुटा देता है। अपने को निःशेष भाव से लुटाकर ही मेघ जलधि कहलाता है। संत भी मेघ की भाँति अवघड़दानी होता है।

तुलसीदास कहते हैं संतों के अंदर काम,

क्रोध, लोभ, मोह रूपी मनोविकार नहीं होता। उनका जीवन जप, तप, व्रत और संयम से संयमित होता है। श्रद्धा, मैत्री, मुदिता, दया आदि श्रेष्ठ गुण उनके हृदय में सदैव वास करते हैं। संतों का हृदय मोम के समान होता है। उनकी करुणा हिमालय सदृश्य होती है, जो पिघलपिघलकर अगणित धाराओं के रूप में प्रवाहित होती है। यही धाराएँ आगे चलकर संत परंपरा बनी हैं। संतों के उपदेशों ने ही संत परंपरा की नींव डाली।

संत परंपरा का प्रारंभिक युग (सं. 1200 से 1550) का सूत्रपात संत जयदेव से लेकर संत धन्ना भगत तक चलता है। इस युग के संतों ने अपने उपदेशों का प्रचार स्वतंत्र रूप से किया। इस समय के प्रमुख संतों में नामदेव, कबीरदास, रैदास की गणना होती है। मध्ययुग में संत युग को दो भागों में बाँटा जा सकता है। पूर्वाद्ध (सं. 1550-1700) तथा उत्तराद्ध (सं. 1700-1850) युग। मध्ययुग के पूर्वाद्ध काल में प्रमुख संतों में संत गुरुनानक देव, दादू दयाल, संत मलूकदास एवं संत तुलसीदास हैं। इसके उत्तराद्ध के प्रधान संतों में संत रज्जब जी, सुंदरदास, बाबा की नाराम, संत दरिया साहब, (भाखड़ वाले), दरियादास (बिहार वाले), गरीबदास, चरणदास आदि का नाम आता है।

संत परंपरा के आधुनिक युग (सं. 1850 से आज) में भी अनेक प्रमुख संतों पलटू, साहब, संत शिवदयाल आदि का प्रादुर्भाव हुआ है। संत परंपरा के मध्ययुग के पूर्वाद्ध में पंथों का संगठन होने लगा था। इसके उत्तराद्ध में आकर सामुदायिक प्रवृत्ति अपेक्षाकृत

अधिक उग्र हो गई। आधुनिक काल में पुनरुद्धार की प्रवृत्ति और विश्वकल्याण की भावना को बहुत बल मिला।

विक्रम की सातवीं शताब्दी से प्रारंभ होने वाली संत परंपरा आगे के युगों में विभिन्न संप्रदायों के सिद्धांतों एवं मतों से पुष्ट होकर पंद्रहवीं शताब्दी तक चली आई है। इसके पश्चात् इसे विशिष्ट नामों से जाना जाता है। पं. परशुराम चतुर्वेदी ने जयदेव से ही संत परंपरा का प्रारंभ माना है, परंतु आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसकी शुरुआत नामदेव से स्वीकार की है। संत साहित्य का श्रीगणेश गीत गोविंद के रचयिता जयदेव से हुआ है, परंतु प्रारंभ में उसकी रेखा क्षीण और धूमिल प्रतीत होती है। वस्तुतः संतधारा की यह क्षीण और अव्यवस्थित रेखा नामदेव के द्वारा व्यवस्थित, प्राँजल और प्रशस्त बनाई गई। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्त नामदेव ने हिंदूमुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य भक्ति मार्ग का सुझाव सुझाया। यहीं से संत परंपरा का सुव्यवस्थित आविर्भाव माना जा सकता है।

सर्वप्रथम कबीरदास ने अपने कुछ विचारों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना आरंभ किया। संत सेन, पीपा, धन्ना, रैदास आदि भी इन्हीं विचारों से अनुप्राणित थे। ये सभी संत रामानंद को अपना गुरु मानते थे। इन संतों ने स्वामी रामानंद के उपदेशों से प्रभावित होकर ही संत परंपरा का श्रीगणेश किया। कबीर एवं उनके समकालीन संतों का काल संत परंपरा का प्रारंभिक युग माना जाता है। इस युग में किसी संप्रदाय विशेष का संगठन नहीं हुआ था।

संत परंपरा के मध्य युग में प्रचलित नियमों का निर्वाह नहीं हो सका। गुरुनानक देव के समय से सामुदायिक संगठन शिथिल पद्धति तथा उपदेश संग्रह की प्रथा प्रारंभ हुई। इसके पूर्वाद्ध काल में नानकदेव ने नानक पंथ, दादू दयाल ने दादू पंथ, बाबरी साहिता ने बाबरी पंथ, हरिदास ने निरंजनी संप्रदाय तथा मलूकदास ने मलूक पंथ की स्थापना की। कबीर के नाम पर कबीर पंथ की स्थापना भी हुई। इसी तरह लालपंथ एवं साधु संप्रदाय का भी उदय हुआ। इन पंथों तथा संप्रदायों के भिन्नभिन्न केंद्र स्थापित हो गए। इनके उपदेश संग्रहों को धर्मग्रंथ का महत्त्व मिलने लगा। इस युग के उत्तराद्ध में बाबा लाल ने बाबा लाली संप्रदाय, संत प्राणनाथ ने धामी संप्रदाय, बाबा धरनीदास का धरनीश्वरी संप्रदाय, दरियादास (बिहार वाले) ने दरियादासी ने शिवनारायणी संप्रदाय, संत चरणदास ने चरणदासी संप्रदाय, संत गरीबदास ने गरीबदासी पंथ, पानपदास ने पानपंथ और रामचरण दास ने रामसनेही संप्रदाय की स्थापना की। इस काल में दीन दरवेश, बुल्लेशाह और बाबा कीनाराम जैसे संतों ने केवल भगवान् के उपदेशों का प्रचार किया। इन्होंने किसी पंथों एवं संप्रदायों की स्थापना नहीं की।

इस काल के संत एक ऐसे समन्वित धर्म का प्रचार करना चाहते थे, जिसके अंतर्गत सभी प्रचलित धर्मों के मूल सिद्धांतों का समावेश हो सके। इसके परिणामस्वरूप सभी धर्मग्रंथों के अध्ययन हेतु जिज्ञासा जागी। पौराणिक गाथाओं की सृष्टि, अलौकिकता की कल्पना, भक्तमालों की रचना तथा अपनेअपने धर्मों एवं संप्रदायों के श्रेष्ठ ग्रंथों की पूजा भी इस काल में की जाने लगी।



भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम कितना मज़बूत

@ पार्थ सारथी

बीआर चोपड़ा के निर्देशन में बनी महाभारत का वो दृश्य जिसमें योद्धा अपना सधा हुआ बड़े से बड़ा अस्त्र छोड़ता था और सामने वाला योद्धा उसकी काट में अपना अस्त्र। दोनों आसमान में जाकर एक दूसरे से टकराते। ज्यादा मारक वाले अस्त्र सामने वाले के अस्त्र को नष्ट कर देता। भारत के पास भी ऐसा ही अचूक माना जाने वाला हथियार है जिसने दुश्मन के कई हमलों को नाकाम किया है। जब पाकिस्तान जैसा पड़ोसी देश हो तो तमाम तरह के अस्त्रों-शस्त्रों से लैस होने की तैयारी करना हालात की मजबूरी भी है और जरूरत में जरूरी भी। 9 मई की रात भारत की नई पीढ़ी के लिए शायद सबसे लंबी रात रही होगी। जो लोग जाग रहे थे वो वीर भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम को देख रहे थे और जो सो रहे थे। वो बस इसलिए आराम से सो पाए क्योंकि हमारी वीर सेना उनकी रक्षा के लिए हमेशा तैनात है। अचानक दे रात अप्रुप्त स्रोतों से खबर आई की बार्डर से सटे इलाकों में पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइल से हमला कर दिया। कई वीडियो इंटरनेट पर वायरल हुए। पाकिस्तान का टारगेट मिलिट्री इंस्टालमेंट को डैमेज करना यानी सीधा हमारी फौज पर हमला। इसे ही शास्त्रों में विनाशकाले विपरीत बुद्धि कहा गया है। हमारी तरफ से इन मिसाइलों को रोकने के लिए स्पाइडर मिसाइल डिफेंस सिस्टम, आकाश मिसाइल डिफेंस सिस्टम के अलावा एस 400 का सबसे बड़ा योगदान रहा। कुछ पर मैं ही उनके सारे अटैक को नाकाम कर दिया गया। ऐसे में आइए जानते हैं कि भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम कितना मजबूत है, कैसे हमलों को नाकाम करता है। विश्व के प्रमुख और सबसे अडवांस्ड मिसाइल डिफेंस सिस्टम कौन कौन से हैं।

कैसे काम करता है एयर डिफेंस सिस्टम

वायु रक्षा प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य आसमान से खतरों को खत्म करना है। चाहे वह दुश्मन के लड़ाकू विमान हों, मानव रहित ड्रोन हों या मिसाइलें। यह रडार, नियंत्रण केंद्रों, रक्षात्मक लड़ाकू विमानों और जमीन पर आधारित वायु रक्षा मिसाइल, तोपखाने और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों की एक जटिल प्रणाली की मदद से किया जाता है। एक वायु रक्षा प्रणाली को तीन परस्पर जुड़े संचालनों में उप-वर्गीकृत किया जा सकता है। वायु रक्षा प्रणाली की दक्षता हवाई खतरे को लगातार और सटीक रूप से ट्रैक करने की इसकी क्षमता से भी निर्धारित होती है और केवल पता लगाने से नहीं। यह आमतौर पर रडार और अन्य सेंसर जैसे कि इन्फ्रारेड कैमरा या लेजर रेंजफाइंडर के संयोजन का उपयोग करके किया जाता है। अधिकतर मामलों में एक वायु रक्षा प्रणाली केवल एक ही खतरे से नहीं निपटती है - इसे जटिल और अव्यवस्थित वातावरण में कई, तेज गति से आगे बढ़ने वाले खतरों की पहचान और ट्रैक करना होता है, जिसमें मित्रवत विमान भी शामिल हो सकते हैं। ट्रैकिंग की सटीकता झूठे खतरों को लक्षित किए बिना दुश्मन को प्रभावी ढंग से बेअसर करने के लिए महत्वपूर्ण है।

लॉन्ग रेंज इंटरसेप्टर (S-400)

भारत ने पहली बार एस 400 का इस्तेमाल करके दुश्मन को बता दिया है कि हमसे लड़ोगे तो चकनाचूर हो जाओगे। एस 400 की ताकत इतनी ज्यादा है कि वो



600 किलोमीटर की दूरी से ही टारगेट को पहचान लेता है। एक साथ 100 से 300 टारगेट को ट्रैक करता है। एस 400 फिट मिसाइलें एक साथ तीन दिशाओं में मिसाइल दाग कर दुश्मन को धूल चटाता है। ये हवा में उड़ते 36 टारगेट को एक साथ निशाना बनाता है। ये सिस्टम मिसाइल से लेकर ड्रोन तक के हमलों को नाकाम कर सकता है। अगर खतरा दूर से ही पकड़ में आ गया तो लॉन्ग रेंज में ही उसे खत्म करने के लिए लॉन्ग रेंज वेपन सिस्टम का इस्तेमाल होता है। फाइटर जेट आ रहा है तो उसे हमारा फाइटर जेट इंगेज कर मार गिराने की कोशिश करेगा। लॉन्ग रेंज में दुश्मन के हमले को फेल करने के लिए भारत के पास S-400 सिस्टम है।

एस-400 कैसे काम करता है

ट्रांसपोर्ट इरेक्टर लॉन्चर: गाइडेंस रडार मिसाइल को टारगेट के लिए गाइड करता है।

सर्विलांस रडार: सर्विलांस रडार ऑब्जेक्ट को ट्रैक कर कमांड वीडिओ को निर्देश देता है।

कमांड और कंट्रोल वीडिओ: कमांड वीडिओ ऑब्जेक्ट की लोकेशन पता कर मिसाइल लॉन्च का निर्देश देता है।

गाइडेंस रडार: टारगेट के पास वाला लॉन्च वीडिओ मिसाइल लॉन्च करता है।

मीडियम रेंज इंटरसेप्टर (MRSAM)

अगर एरियल खतरा ज्यादा आगे आ गया तो मीडियम रेंज में इंटरसेप्शन के लिए भारत के पास मिडियम रेंज सर्फेस टु एयर मिसाइल (MRSAM) भी है। बराक मिसाइल दुश्मन की तरफ से आ रहे खतरे को 70 किलोमीटर रेंज तक तबाह कर सकती है।

शार्ट रेंज इंटरसेप्टर (आकाश)

अगर खतरा इन दो लेयर से आगे आ गया तो उससे निपटने के लिए आकाश एयर डिफेंस सिस्टम है। यह

स्वदेशी सिस्टम है। इसकी एक यूनिट चार एरियल टारगेट को एक साथ नष्ट कर सकती है। ये सटीक निशाना लगाता है। साथ ही, इसे तेजी से कहीं भी तैनात किया जा सकता है। ये दुश्मन की मिसाइल, फाइटर जेट और ड्रोन को नष्ट करने में सक्षम है। साथ ही SPYDER है। ये सर्फेस टु एयर मिसाइल सिस्टम है, जो कम ऊंचाई पर उड़ रहे खतरे को नष्ट कर सकता है।

क्लोज रेंज इंटरसेप्शन (इग्ला-एस)

अगर खतरा बहुत ही पास आ गया तो इसे नष्ट करने के लिए इग्ला-एस मैनपोर्टेबल एयर डिफेंस सिस्टम (MANPADS) भी है। ये भी फाइटर जेट, ड्रोन और हेलिकॉप्टर को नष्ट करने में सक्षम है।

विश्व के प्रमुख और सबसे अडवांस्ड मिसाइल डिफेंस

भारत के डिफेंस सिस्टम ने जिस तरह से पड़ोसी देश के हमलों का करारा जवाब दिया, उससे यह बात सामने आई है कि आखिर किन-किन देशों के पास किस तरह के डिफेंस सिस्टम हैं।

अमेरिका THAAD - टर्मिनल हाई अल्टीट्यूड एरिया डिफेंस

शॉर्ट, मीडियम और इंटरमीडिएट रेंज की बैलिस्टिक मिसाइलों से सुरक्षा करता है। दक्षिण कोरिया, यूएई, गुआम में इसकी तैनाती की गई है।

इजरायल की डेविड्स स्लिंग और एरो प्रणाली

मध्यम दूरी की कूज मिसाइलों को रोकने के लिए इसे जाना जाता है। एरो-2 और एरो-3: लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों के लिए, एरो-3 अंतरिक्ष में भी इंटरसेप्ट कर सकती है। अमेरिका और इस्राइल की साझेदारी में इसे डेवलप किया गया।

इजरायल की आयरन डोम

कम दूरी की रॉकेट और तोपों से रक्षा करना मकसद है। 90% से अधिक सफलता दर, वास्तविक समय में निशाना साधने की क्षमता है। आतंकवादी हमलों के खिलाफ सबसे अधिक सफल प्रणाली माना जाता है।

चीन की HQ-19 बोर HQ-22 सिस्टम

THAAD के समान, बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए इसके इस्तेमाल किया जाता है।

अमेरिका की ग्राउंड-बेस्ड मिडकोर्स डिफेंस (GMD)

अमेरिका की मुख्य भूमि की रक्षा इसका मकसद है। इसकी अलास्का और कैलिफोर्निया में इंटरसेप्टर मिसाइलें।

अमेरिका की एजिस कॉम्बैट प्रणाली

जहाज आधारित प्रणाली युद्धपोतों से बैलिस्टिक मिसाइलों को मिड-कोर्स में मार गिराने की क्षमता है। अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया जैसे देश इसका इस्तेमाल कर रहे हैं।

रूस की S-400 ट्रायम्फ प्रणाली

हवाई जहाज, ड्रोन और बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराना इसका मकसद है। इसकी रेंज लगभग 400 किमी है। खरीदार देशों में भारत, चीन, तुर्की शामिल हैं।

रूस की S-500 प्रोमेटेई

ICBM, हाइपरसोनिक मिसाइलों और उपग्रहों को भी निशाना बना सकती है। इसको लेकर दावा है कि ये अंतरिक्ष के पास तक मिसाइलों को इंटरसेप्ट कर सकती है।

कठोर तप और मृत्यु

कठोर तप और तपस्याओं के पीछे यह दृष्टिकोण रहा है कि यदि मनुष्य अपने पापों और दुखों से बचना चाहता है तो उसे अपने शरीर को कष्ट देना होगा। शरीर को बेवजह कष्ट देने वाले लोग ही मोक्ष के द्वार पर पहुंचते हैं। सवाल यह है कि क्या कठोर तप करने से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है ? इसका सटीक उत्तर दे रहे हैं परम पूज्य सदगुरुदेव महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी...

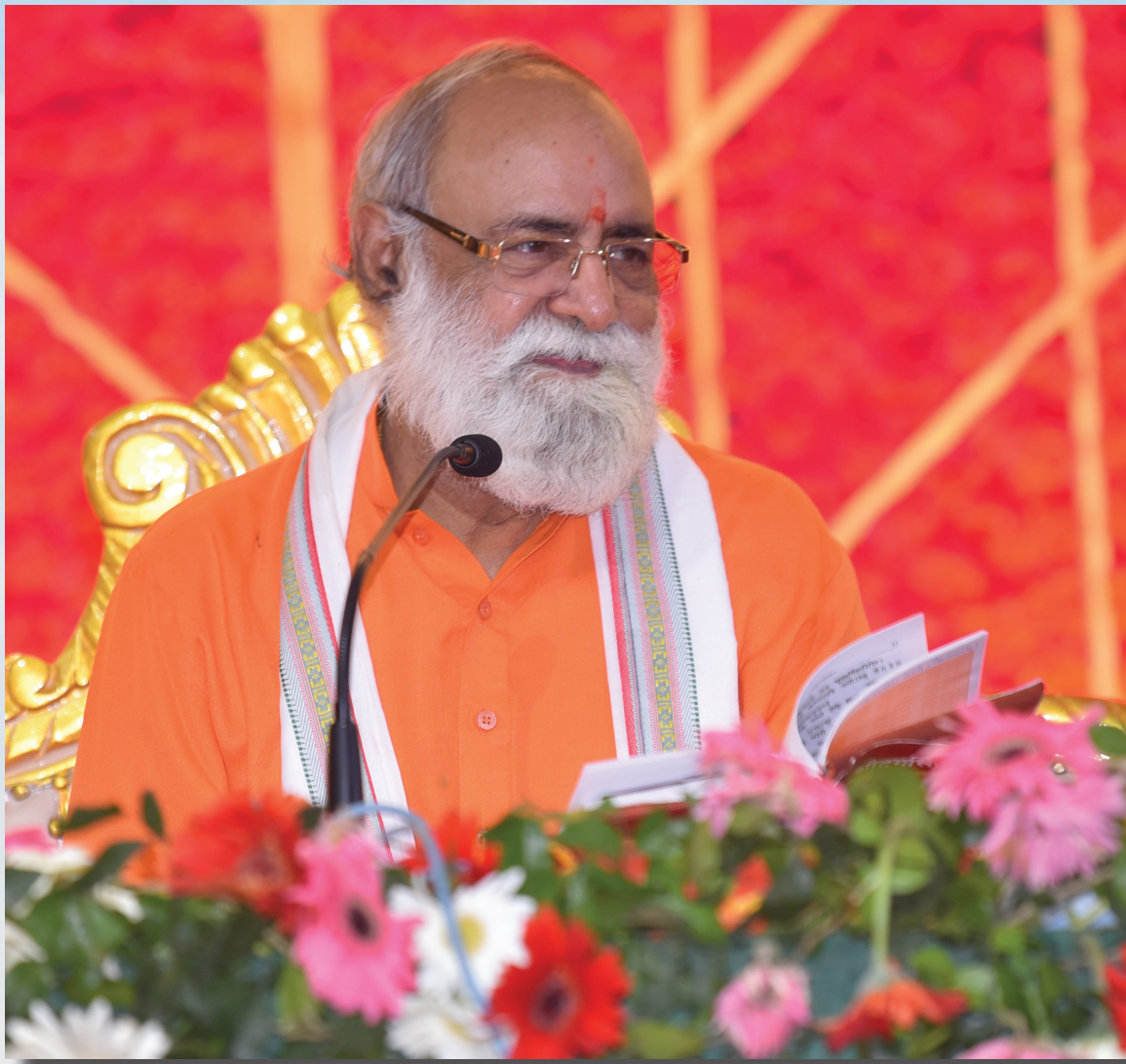
परम पूज्य सदगुरुदेव महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी कहते हैं कि धर्म और मुक्ति के नाम पर एक नहीं, हजारों मान्यताएं प्रचलित हैं। विभिन्न धर्मों के लोग सदियों से तरह-तरह की मान्यताओं में जकड़े हुए हैं। कुछ धर्मों और उनके गुरुओं द्वारा मान्यताओं की आड़ में जो कर्मकांड अस्तित्व में आए, उनमें कठोर तप भी एक मान्यता है। आप पहले तो यह बात मान लें कि धर्म और मुक्ति का कठोर तप, तपस्या और लंबे उपवासों से कोई लेना-देना नहीं है। कठोर तप परमात्मा ने नहीं, बल्कि परमात्मा का नाम लेकर मनुष्य ने बनाए हैं।

कोई भी धर्म शास्त्र कठोर नहीं है। उसे धर्म गुरुओं ने कठोर बना दिया है। परमात्मा और मुक्ति पाने के लिए मध्ययुगीन यूरोप के तथाकथित संतों ने ऐसे-ऐसे कठोर नियम बनाए जिनकी यहां चर्चा करना भी अनैतिक और मनुष्य विरोधी होगा। दुनिया में ऐसे देश विरले ही होंगे जहां धर्म गुरुओं ने कठोर मान्यताएं न निर्मित की हों। इन कठोर मान्यताओं के कारण अनेक धर्म विखंडित होते चले गए। मान्यताएं जब कट्टर होने लगती हैं तो विद्रोह होना स्वाभाविक है। आध्यात्मिक जगत में विद्रोह की प्रवृत्ति केवल धर्म ने पैदा की है। जिस धर्म को सबसे अधिक सरल होना चाहिए, वही कठोर बन गया।

परम पूज्य सदगुरुदेव जी कहते हैं कि मुक्ति और परमात्मा तक पहुंचने के लिए भाव, प्रेम और सरलता का होना बेहद जरूरी है मगर इनके स्थान पर कठोर नियम और कर्मकांड मनुष्य पर थोप दिए गए। परमात्मा तक पहुंचने का रास्ता सुगम है लेकिन कठोर मान्यताओं ने इस रास्ते को दुर्गम बना दिया है। धर्म गुरुओं ने कठोर तपों और मान्यताओं को हमारी नियति बना दिया। धर्म जैसे-जैसे कठोर हुआ है, वैसे-वैसे लोगों का धर्म से मोह भंग हुआ है। कठोर तपों और तपस्याओं ने इस जगत के लाखों लोगों को नास्तिक बना दिया है। धर्म गुरुओं के कठोर व्यवहार ने लोगों में जो भय पैदा किया, वह सरासर अधार्मिक था।

कठोर तप और तपस्याओं के पीछे यह दृष्टिकोण रहा है कि यदि मनुष्य अपने पापों और दुखों से बचना चाहता है तो उसे अपने शरीर को कष्ट देना होगा। शरीर को बेवजह कष्ट देने वाले लोग परमात्मा और मोक्ष के द्वार पर पहुंचते हैं। परमात्मा के द्वार तक पहुंचने के लिए कोई शर्त नहीं है मगर विभिन्न धर्मों का अध्ययन करें तो हर जगह अनेक शर्तें नजर आती हैं। धर्म गुरु और तथाकथित प्रवचनकर्ता मानवता को यह कहकर शोषित करते आए हैं कि यदि वे फलों अनुष्ठान या कठोर तप नहीं करेंगे तो उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी।

परम पूज्य सदगुरुदेव महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी कहते हैं



कि परमात्मा की प्राप्ति के लिए कठोरता नहीं, सहृदयता चाहिए। अनुष्ठान नहीं, प्रेम चाहिए। कर्मकांड नहीं, भाव चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण ने विदुर का साग क्यों खाया ? उन्होंने दुर्योधन का मेवा त्याग कर केवल विदुर का ही साग क्यों ग्रहण किया ? कर्मकांडियों को इस उदाहरण से समझ जाना चाहिए कि भगवान प्रेम और भाव के भूखे हैं। विदुर ने कोई कठोर तप थोड़े ही किया था, उन्होंने कभी मालाएं

नहीं फेंकीं लेकिन अपने प्रेम और भाव से भगवान को प्राप्त कर लिया। भगवान को प्राप्त करने के लिए विदुर कहीं नहीं गए, बल्कि साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण स्वयं उनके निवास स्थान पर पहुंच गए। इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा ?

मैं कर्मकांडियों और कठोर तपों का प्रवचन देने वाले प्रकांड विद्वानों को मीरा का उदाहरण बताना चाहता हूं। मीरा को सभी जानते



हैं मगर मीरा ने क्या कर दिखाया, यह अपने आप में बड़ी बात थी। क्या मीरा ने कठोर तप और लंबे अनुष्ठानों से भगवान को वश में किया था ? बिल्कुल नहीं, मीरा के पास केवल प्रेम और भाव था जिसके कारण उसने प्रभु को पा लिया। मीरा ने कभी लंबे-चौड़े यज्ञ नहीं किए, कठोर उपवास नहीं रखे लेकिन उसके प्रेम ने प्रभु को डोरी की तरह खींच लिया। यदि कठोर तपों से प्रभु की प्राप्ति संभव होती तो मीरा को वह गति नहीं मिलती जो उसे साक्षात् प्रभु ने प्रदान की। हमारे सदगुरु और संतों ने 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' जैसे जो वचन हमें प्रदान किए, उनका भाव कठोर तप की वकालत करने वाले कर्मकांडियों को समझना चाहिए। संत रैदास, रविदास, संत नामदेव, कबीर, संत तुकाराम जैसे महान संतों ने हमें भगवत प्राप्ति के लिए प्रेम और भाव की शिक्षा दी थी। मुक्ति का मार्ग प्रेम से होकर गुजरता है, न कि कठोर नियमों से। प्रभु सुकोमल हृदय में वास करते हैं। तथाकथित गुरुओं और संतों में न तो प्रेम के दर्शन होते हैं और न ही भाव के। जैसे ये खुद कठोर हैं, वैसे ही लोगों से कठोरता की अपेक्षा रखते हैं। प्रेम तो है ही नहीं।

परम पूज्य सदगुरुदेव महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी कहते हैं कि पूरा विश्व कभी भी प्रेम के भाव को समझ नहीं पाया। 14वीं सदी से लेकर आज तक हम सिर्फ कट्टरता और कठोर नियमों में ही उलझे हुए हैं। मुझे 16वीं शताब्दी का एक राज्य याद आता है जिसका नाम सैक्सोनी था। बाद में यह राज्य जर्मन महासंघ का हिस्सा हो गया था। 1848 से 49 के बीच इस देश की बहुत बुरी हालत थी। धर्म के नाम पर इतनी अधिक कट्टरताएं थीं कि लोगों का जीना दूभर हो गया था। आज 21वीं शताब्दी में जितनी कट्टरताएं नहीं हैं, उससे 50 गुना अधिक कट्टरताएं यूरोप के कई देशों में थीं। धर्म और मुक्ति को लेकर हालत कितनी बदतर थी, इसका अंदाजा आप महान विचारक नील्से की पुस्तक 'जरथ्रुस्ट ने कहा' से लगा सकते हैं। हमारे कट्टर विद्वानों ने भी शायद यह पुस्तक अवश्य पढ़ी होगी। यदि न पढ़ी हो तो ये इसे जरूर

पढ़ें। कठोर तपों के नाम पर भारत और पश्चिमी जगत के लोगों पर वैराग्य, उपवास और ब्रह्मचर्य थोपा गया। कठोरताएं धर्म से परे हैं और यह एक प्रकार से धार्मिक विक्षिप्तता को ही बढ़ावा देती हैं। यूनानी समाज ने भी धर्म के नाम पर कई कठोर नियमों को झेला था। यह अलग बात है कि यूनान एक महान सभ्यता और संस्कृति का पुरोधा रहा है। विश्व का इतिहास धार्मिक कट्टरताओं से भरा है। ये धार्मिक कट्टरताएं कभी-कभी निर्ममता और क्रूरता की सभी हदों को पार कर जाती हैं, इतिहासकारों ने ऐसी क्रूरताओं को समय-समय पर कलमबद्ध भी किया है।

बलि क्या थी ? यह भी धार्मिक कट्टरता का एक चरण थी जिसके अधिष्ठाता तथाकथित संत और गुरु थे। रोम के इतिहास में राजा टाइबेरियस के समय लोग हर उस चीज की बलि ईश्वर को देते थे जो उन्हें सुख-सुविधा पहुंचाती थी। आपको आश्चर्य होगा कि कठिन तपस्याएं और कठोर साधनाएं इसी युग की देन हैं। त्याग और तप के नाम पर मनुष्य को केवल कष्टों की भोगना ही सिखाया गया है। हमने नरबलि के भी अनेक किस्से सुने हैं जो केवल धर्म गुरुओं और तथाकथित संतों के कहने पर ही शुरू हुए थे। यह धर्म गुरुओं का ही प्रताप है कि संसार को नास्तिक जैसा नया शब्द मिला।

कठोर तप और कट्टरताएं विष के प्याले की तरह होती हैं। यह प्याला मीरा को पीना पड़ा, सुकरात को पीना पड़ा। इन संतों ने जिस प्रेम, भाव और मानवता की बात की, उसे तथाकथित धर्म गुरुओं ने कभी नहीं समझा। आज भी कठोर तपों के नाम पर धर्म गुरु हमें क्या दे रहे हैं ? अपने शरीर को कष्ट देने की आवश्यकता क्या है, जब प्रभु केवल प्रेम और भाव से आपका कल्याण करने के लिए दौड़े चले आते हैं। सुदामा के कच्चे चावलों में किसी तरह का कठोर कर्मकांड नहीं था, बल्कि भाव और सच्चा प्रेम था।

परम पूज्य सदगुरुदेव महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी कहते हैं कि तथाकथित संतों और गुरुओं ने विश्व समुदाय को कभी भी

प्रेम और भाव प्रदान नहीं किया क्योंकि इनके पास खुद कभी प्रेम और भाव रहा ही नहीं। अपनी आध्यात्मिक यात्रा के दौरान मैं ऐसे अनेक गुरुओं से मिला हूं जिनमें प्रेम लेश मात्र भी नहीं था। इन गुरुओं में कठोर तपों के कारण अहंकार और अभिमान आ गया था। एक गुरु के पास जब मैं पहुंचा तो उन्होंने मुझसे साफ कह दिया कि यदि तुमने दिन में सौ मालाएं नहीं फेंकी तो तुम्हारा कभी भी कल्याण नहीं हो पाएगा। जब मैंने पूछा कि क्या प्रभु मालाएं फेंके बगैर मुझे प्राप्त नहीं हो सकते तो उन गुरु ने मुझे जो भाषण दिया, उसे सुनकर मैं अगले दिन चुपचाप अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर घर चला आया।

आज भी आप बड़े-बड़े संतों और तपस्वियों के पास जाओ तो वे प्रेम और भाव के बजाय हमें केवल कठोर तपों की सलाह देते हैं। कुछ संत तो सलाह नहीं, बल्कि आदेश ही दे डालते हैं। ऐसे संतों ने मानवता को गुमराह करने के साथ-साथ उनमें भय के जो बीज बोए, उनका वृक्ष आज भी देखा जा सकता है। कठोर तपों, तपस्याओं और लंबे-लंबे उपवासों के डर से लोग कपड़ों की तरह धर्म बदलने लगे हैं। अपने दुखों से मुक्त होने के लिए व्यक्ति की नियति ही ऐसी हो गई है कि वह बेचारा धर्मों और गुरुओं को बदलते-बदलते ही अपना पूरा जीवन बिता देता है।

कहावत है कि जिस घर को न देखो वह अच्छा। संसार के अधिकांश धर्म और उन्हें चलाने वाले अधिष्ठाता लोगों की कहानी एक-सी है, केवल पात्र बदले होते हैं। भारत में आपको धर्म के नाम पर जो कट्टरताएं मिलेंगी, वैसी ही कट्टरताएं पश्चिमी देशों में भी मिलेंगी। कहीं भी चले जाओ बस पात्र अलग-अलग हैं लेकिन सबकी भूमिका एक जैसी है। उत्तरी भारत के एक महान संत से जब मैंने पूछा कि आप लोगों को कठोर नियमों और तपों के नाम पर भयभीत क्यों करते हो तो उन संत महोदय ने आंख दबाकर हंसते हुए कहा कि यदि लोग भयभीत होना छोड़ देंगे तो हमारी रोजी-रोटी का क्या होगा।

संसाधनशीलता और नवाचार को बढ़ावा

संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने पर जोर देता है 'कबाड़ से जुगाड़' का दर्शन

‘कबाड़ से जुगाड़’ सिर्फ एक तरीका नहीं, बल्कि एक रचनात्मक दर्शन है जो संसाधनशीलता और नवाचार को बढ़ावा देता है। यह अपसाइकल की गई रचनाओं और सरल समाधानों के माध्यम से अपरंपरागत सोच की शक्ति का प्रमाण है। ‘कबाड़ से जुगाड़’ का दर्शन बेकार वस्तुओं को उपयोगी बनाने और संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने पर जोर देता है। यह दर्शन हमें नए और रचनात्मक समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है, जो मौजूदा समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं और इससे कचरे को कम करने और पर्यावरण को बचाने में मदद मिलती है। यह आत्मनिर्भरता का भी दर्शन है, जो हमें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए खुद पर निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, यह दर्शन जटिल समस्याओं के लिए सरल और व्यावहारिक समाधान खोजने पर जोर देता है।

पार्क और अन्य कलाकृतियां ‘कबाड़ से जुगाड़’ के उपक्रम को दर्शाती

जुगाड़ एक बोलचाल का हिंदी शब्द है जिसका मतलब है अपरंपरागत, किफायती नवाचार। कबाड़ से बने म्यूरल, पार्क और अन्य कलाकृतियां ‘कबाड़ से जुगाड़’ के उपक्रम को दर्शाती हैं। कबाड़ से बनाए गए टेलीस्कोप, लेजर लाइट ब्लोइंग कार, वाटर प्यूरीफायर आदि कबाड़ से जुगाड़ के उदाहरण हैं। चंडीगढ़ का रॉक गार्डन, जुन्नारदेव जनपद पंचायत के बरेली पार गांव के ग्रामीणों का कबाड़ से बना स्वच्छता पार्क एवं मेरठ का ‘कबाड़ से जुगाड़’ अभियान ऐसे विरल एवं अनुकरणीय उदाहरण हैं जो राष्ट्रीय फलक पर चमक रहे हैं। कबाड़ से जुगाड़ बेकार की वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएं बनाने की एक प्रक्रिया है। कबाड़ से जुगाड़ ना केवल हमारे पर्यावरण के संरक्षण के लिए बहुत सहायक है बल्कि यह अनुपयोगी वस्तुओं के निपटान का भी एक सटीक उपाय है। इसके माध्यम से हम ऐसी अनुपयोगी वस्तुओं को फेंकने की जगह उनसे कुछ उपयोगी वस्तुएं बना सकते हैं। कबाड़ से जुगाड़ के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम दिया जा सकता है, जो रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता की दिशा में उठाया गया एक सांथक कदम है। हम भारतवासी वैसे भी जुगाड़ू होते हैं जो अपना काम बनाने के लिए हर जगह कुछ ना कुछ जुगाड़ कर लेते हैं। यदि हम अपनी रचनात्मकता कबाड़ से जुगाड़ में लगाएं तो दिनों दिन बढ़ते जा रहे कचरे के निपटान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इससे प्लास्टिक एवं ई-कचरे में निरंतर कमी आती जाएगी और पर्यावरण संरक्षण भी बढ़ेगा। संसाधनों पर वह भी बोझ कम पड़ेगा।

मेरठ का ‘कबाड़ से जुगाड़’ अभियान अब राष्ट्रीय फलक तक चमका, एक सकारात्मक सोच एवं सृजन का अनूठा उदाहरण बन गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के 93वें संस्करण में योगी आदित्यनाथ सरकार के इस प्रयास की काफी सराहना की। शहरों को संवारने के प्रदेश सरकार के सपनों को साकार करते हुए मेरठ नगर निगम ने निम्नोद्योग्य वस्तुओं से कम लागत में ही शहर की आभा में चार चांद लगा दिए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह प्रयास पर्यावरण की सुरक्षा और शहर के



सुंदरीकरण से जुड़ा है। निम्नोद्योग्य वस्तुएं स्कैप, पुराने टायर, कबाड़, खराब ड्रम से भी कम खर्च में कैसे शहर को संवारा जा सकता है, मेरठ इसकी बानगी है। कम खर्च में सावर्जनिक स्थलों का सुंदरीकरण कैसे हो, यह अभियान इसकी मिसाल है। खराब पड़ी चीजों का प्रयोग कर शहर को सजाया गया। गांधी आश्रम चौराहा, गढ़ रोड पर लोहे के स्कैप, पुराने पहियों से फाउंटेन निर्मित कराया गया। सर्किट हाउस चौराहे पर लाइट ट्री, पुराने बेकार ड्रमों से स्ट्रीट इंस्टलेशन, हाथ ठेली के बेकार पहियों से बैरिकेडिंग कर मिनी व्हील पार्क, जेसीबी के पुराने टायरों से डिस्प्ले वॉल, पार्कों में बैठने के लिए स्टूल मेज आदि की व्यवस्था की गई। मेरठ नगर निगम ने शहर को चमकाने के लिए अनोखे प्रयोग किए, जो काफी सफल रहे। दरअसल नगर निगम में बने गोदाम में पड़े कबाड़ की न तो उचित कीमत मिल रही थी और न ही इसका सही उपयोग एवं निपटान हो रहा था, पर योगी सरकार की पहल पर नगर आयुक्त अमित पाल शर्मा ने शहर को जगमगाने का निर्णय लिया। लाइटिंग वाला कृत्रिम पेड़ भी न सिर्फ लोगों को आकर्षित कर रहा है, बल्कि शहर की खूबसूरती में चार चांद लगा रहा है। इसकी आभा देख लोग निहाल और अचंभित हो रहे हैं।

कबाड़ से जुगाड़ का मतलब है बेकार पड़ी चीजों से कुछ उपयोगी या रचनात्मक बनाना, जैसे कि कचरे से सुंदर सजावटी वस्तुएं, या बेकार प्लास्टिक से जूते-चप्पल बनाना। ग्रामीणों ने कबाड़ से एक सुंदर स्वच्छता पार्क बनाया, जिसमें सजावटी वस्तुएं, आरामदायक बैठने की व्यवस्था और स्वच्छता से संबंधित कलाकृतियां शामिल हैं। बच्चों को सिखाने के लिए कबाड़ के सामान से खिलौने बनाए जा सकते हैं, जैसे कि टेलीस्कोप, लेजर लाइट ब्लोइंग कार, रबर बैंड नाव, टेबल लैंप, वाटर प्यूरीफायर

आदि। बेकार लकड़ी, प्लास्टिक और अन्य सामग्रियों से फर्नीचर बनाया जा सकता है, जैसे कि टेबल, कुर्सी, और अलमारी। कबाड़ से कलाकृतियां बनाई जा सकती हैं, जैसे कि पेंटिंग, मूर्तिकला, और सजावटी वस्तुएं। पुराने कपड़ों से नए कपड़े या बैग बनाए जा सकते हैं। कबाड़ से खाद और अन्य उपयोगी चीजें बनाई जा सकती हैं, जो खेती के लिए उपयोगी हो सकती हैं। जयपुर फुट, यह एक कृत्रिम अंग है जो कम लागत में बनाया जाता है और यह ‘जुगाड़’ मानसिकता का एक बेहतरीन उदाहरण है।

फुटवियर फैक्ट्रियों में इस्तेमाल होता प्लास्टिक ढाना

प्लास्टिक के कबाड़ को रिसाइकल करके उपयोगी चीजें बनाई जा सकती हैं, जैसे कि प्लास्टिक ढाना जो फुटवियर फैक्ट्रियों में इस्तेमाल होता है। कबाड़ से विभिन्न उपकरण बनाए जा सकते हैं, जैसे कि पानी फिल्टर, यांत्रिक उपकरण आदि। कबाड़ से सजावटी वस्तुएं बनाई जा सकती हैं, जैसे कि विंड चाइम, फोटो फ्रेम, फूलों के गमले, आदि। जो सामान घर में उपयोग ना हो तो वह कबाड़ में तब्दील हो जाता है। इसके बाद उसे ऐसे ही बाहर फेंक दिया जाता है। अगर यही कबाड़ आपकी सेहत बनाने का काम करने के साथ ही गांव और शहर की सुंदरता में चार चांद लगा दे तो यह अपने आपमें चर्चा एवं अनुकरणीय उदाहरण बन जाता है। कुछ ऐसा ही किया है आदिवासी ग्राम पंचायत बरेलीपार के लोगों ने, खेतों में उपयोग होने वाले औजारों सहित घर की खराब वस्तुओं का उपयोग कर ग्रामीणों ने ऐसा काम किया कि जो भी देखता है तो दंग रह जाता है। कबाड़ से ग्रामीणों ने स्वच्छता पार्क बनाने के साथ ही हेलीकॉप्टर तक बना दिया। कबाड़ के जुगाड़ से ग्रामीणों ने सुंदर पार्क का

निर्माण किया तो लोगों की सेहत बनाने में भी कारगर साबित हो रहा है।

आज दुनिया के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं, जिसमें से ई-वेस्ट एक नई उभरती विकराल एवं विध्वंसक समस्या भी है। दुनिया में हर साल 3 से 5 करोड़ टन ई-वेस्ट पैदा हो रहा है। ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर के मुताबिक भारत सालाना करीब 20 लाख टन ई-वेस्ट पैदा करता है और अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी के बाद ई-वेस्ट उत्पादक देशों में 5वें स्थान पर है। दुनिया डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं की ओर तेजी से बढ़ रही है, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित सेवाएं एवं इलेक्ट्रॉनिक क्रांति ने लोगों के जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन अर्थव्यवस्था एवं जीवन का डिजिटल अवतार इलेक्ट्रॉनिक कचरे की शक्ति में एक नयी चुनौती एवं जटिल समस्या को लेकर आया है।

घरों में इस्तेमाल होनेवाले कूलर, वाशिंग मशीन, एयर कंडीशनर जैसी वस्तुओं के अलावा कार्यालय में लैपटॉप, कम्प्यूटर, मोबाइल, डिजिटल घड़ी, टीवी तय समय के बाद ई-कचरे में परिवर्तित हो जाते हैं। इस ई-कचरे का निपटान बड़ी समस्या है। इसी क्रम में पूर्व दिल्ली सरकार ने घोषणा की थी कि दिल्ली में भारत का पहला ई-कचरा इको-पार्क खोला जायेगा। 20 एकड़ में बनने वाले इस पार्क में बैटरी, इलेक्ट्रॉनिक सामान, लैपटॉप, चार्जर, मोबाइल और पीसी से अनूठे एवं दर्शनीय चीजों को निर्मित किया जायेगा। इसी कड़ी में कानपुर में ई-वेस्ट प्रबंधन का एक बेहतरीन मॉडल सामने आया है। यहां जयपुर के एक कलाकार ने ई-वेस्ट से 10 फीट लंबी मूर्ति बनाई है। इसे बनाने में 250 डेस्कटॉप और 200 मदरबोर्ड, केबल और ऐसी अनेक खराब इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया है।

जानलेवा घातकता का शिकार हो रहे छात्र

यह दुर्भाग्यपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण है कि हमारी छात्र प्रतिभाएं आसमानी उम्मीदों, टॉपर संस्कृति के दबाव व शिक्षा तंत्र की विसंगतियों के चलते आत्मघात की शिकार हो रही हैं। हाल ही में लगातार हो रही छात्रों की दुखद मौतें जहां शिक्षा प्रणाली अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिस्पर्धा पर प्रश्न खड़े करती हैं, वहीं विचलित भी करती हैं। इनमें राजस्थान स्थित कोटा के नीट के परीक्षार्थी और मोहाली स्थित निजी विश्वविद्यालय में फोरेंसिक साइंस का एक छात्र शामिल था। पश्चिम बंगाल के आई आई टी खड़गपुर में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के तीसरे वर्ष के छात्र मोहम्मद आसिफ कमर का शव उनके हॉस्टल रूम में फंदे से लटका मिला। भुवनेश्वर के कीट में कम समय में दूसरी नेपाली छात्रा की मौत से विश्वविद्यालय की छवि और भारत के विदेशी छात्रों को आकर्षित करने के प्रयासों पर सवाल उठ रहे हैं। नीट के पेपर के तनाव में नूपुर ने नीट पेपर के एक दिन पहले फांसी लगाकर जान देना एवं मौत को गले लगाना हमारी घातक प्रणालीगत विफलता एवं टॉपर संस्कृति की आत्महंता सोच को ही उजागर करती है। निश्चित रूप से छात्र-छात्राओं के लिये घातक साबित हो रही टॉपर्स संस्कृति में बदलाव लाने के लिए नीतिगत फैसलों की सख्त जरूरत है। राजस्थान सरकार की ओर से प्रस्तावित कोचिंग संस्थान (नियंत्रण और विनियमन) विधेयक इस दिशा में बदलावकारी साबित हो सकता है। लेकिन केन्द्र सरकार को भी ऐसे ही कदम उठाने होंगे ताकि छात्रों में आत्महत्या की समस्या के दिन-पर-दिन विकराल होते जाने पर अंकुश लग सके। यह शिक्षाशास्त्रियों, समाज एवं शासन व्यवस्था से जुड़े हर एक व्यक्ति के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

कोटा गए चौदह छात्रों ने इस साल आत्महत्याएं कीं

कोचिंग संस्थानों की बढ़ती बाढ़ एवं गलाकाट प्रतिस्पर्धा में छात्र किस हद तक जानलेवा घातकता का शिकार हो रहे हैं। यह दुखद ही है कि सुनहरे सपने पूरा करने का ख्वाब लेकर कोटा गए चौदह छात्रों ने इस साल आत्महत्याएं की हैं। विडंबना यह है कि बार-बार चेतावनी देने के बावजूद कोचिंग संस्थानों के संरचनात्मक दबाव, उच्च दांव वाली परीक्षाओं, गलाकाट स्पर्धा, दोषपूर्ण कोचिंग प्रथाएं और सफलता की गारंटी के दावों का सिलसिला थमा नहीं है। यही वजह है कि हाल ही में केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण यानी सीसीपीए ने कई कोचिंग संस्थानों को भ्रामक विज्ञापनों और अनुचित व्यापारिक प्रथाओं के चलते नोटिस दिए हैं। दरअसल, कई कोचिंग संस्थान जमीनी हकीकत के विपरीत शीर्ष रैंक दिलाने और चयन की गारंटी देने के थोथे एवं लुभावने वायदे करते रहते हैं। निस्संदेह, इस तरह के खोखले दावे अक्सर कमजोर छात्रों और चिंतित अभिभावकों के लिये एक घातक चक्रव्यूह बन जाते हैं। छात्रों को अनावश्यक प्रतिस्पर्धा के लिये बाध्य करना और योग्यता को अंकों के जरिये रैंकिंग से जोड़ना कालांतर में अन्य छात्रों को निराशा के भंवर में फंसा देता है। वास्तव में सरकार को ऐसा पारिस्थितिकीय तंत्र विकसित करना चाहिए, जो विभिन्न क्षेत्रों में रुचि रखने वाले युवाओं के लिये पर्याप्त संख्या में रोजगार के अवसर पैदा कर सके। वास्तव में हमें युवाओं को मानसिक रूप से सबल बनाने की सख्त जरूरत है, तभी भारत सशक्त होगा, विकसित होगा।



पारिवारिक दबाव, शैक्षिक तनाव और पढ़ाई में अक्ल आने की महत्वाकांक्षा ने छात्रों के एक बड़े वर्ग को गहरे मानसिक अवसाद में डाल दिया है। युवाओं को भी सोचना होगा कि जिंदगी दोबारा नहीं मिलती। इसे यूं ही तनाव में आकर ना गंवाएं, बल्कि जिंदगी में आने वाली कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करें। पढ़ाई में असफल रहने के कारण कुछ बच्चों पर मानसिक दबाव बढ़ रहा है। हर परिवार की अपने बच्चों से ज्यादा अपेक्षाएं होती हैं। अधिकतर युवा जिंदगी में आने वाली समस्याओं को बर्दाश्त नहीं कर पाते और वे अपनी बात किसी से साझा तक नहीं करते। प्रतिभागियों को बताया जाना चाहिए कि कोई भी परीक्षा जीवन से बड़ी नहीं होती। छात्रों की आत्महत्या की घटनाएं तथाकथित समाज एवं राष्ट्र विकास एवं शिक्षा की विडम्बनापूर्ण एवं त्रासद तस्वीर को बयां करती हैं। आत्महत्या शब्द जीवन से पलायन का डरावना सत्य है जो दिल को दहलाता है, डराता है, खौफ पैदा करता है, दर्द देता है। प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों, उच्च शिक्षा संस्थानों एवं कोचिंग संस्थानों में आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं हमारी चिन्ता का सबब बनना चाहिए।

कुछ अलग रहा अवसाद का कारण

वैसे छात्रों की आत्महत्या कोई नई बात नहीं है, ऐसी खबरें हर कुछ समय बाद आती रहती हैं। रिकॉर्ड बताते हैं कि पिछले एक दशक में कोचिंग संस्थानों में ही नहीं, आईआईटी जैसे संस्थानों में ही 52 छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। यह संख्या इतनी छोटी भी नहीं कि ऐसे मामलों को अपवाद मानकर नजरअंदाज कर दिया जाए। बेशक ऐसे हर मामले में अवसाद का कारण कुछ अलग रहा होगा, वे अलग-अलग तरह के दबाव होंगे, जिनके कारण ये छात्र-छात्राएं आत्महत्या के लिए बाध्य हुए होंगे। ऐसे

संस्थानों में जहां भविष्य की बड़ी-बड़ी उम्मीदें उपजनी चाहिए, वहां अगर दबाव और अवसाद अपने लिए जगह बना रहे हैं और छात्र-छात्राओं को आत्महंता बनने को विवश कर रहे हैं तो यह एक काफी गंभीर मामला है। शैक्षणिक दबावों के चलते छात्रों में आत्महंता होने की घातक प्रवृत्ति का तेजी से बढ़ना हमारे नीति-निर्माताओं के लिये चिन्ता का कारण बनना चाहिए। क्या विकास के लम्बे-चौड़े दावे करने वाली भारत सरकार ने इसके बारे में कभी सोचा? क्या विकास में बाधक इस समस्या को दूर करने के लिये सक्रिय प्रयास शुरू किए?

आंकड़ों ने शासन-व्यवस्था के साथ-साथ समाज-निर्माताओं को चेताया

विचित्र है कि जो देश दुनिया भर में अपनी संतुलित जीवनशैली एवं अहिंसा के लिये जाना जाता है, वहां के शिक्षा-संस्थानों में हिंसा का भाव पनपना एवं छात्रों के आत्महंता होते जाने की प्रवृत्ति का बढ़ना अनेक प्रश्नों को खड़ा कर रहा है। ऐसे ही अनेक प्रश्नों एवं खौफनाक दुर्घटनाओं के आंकड़ों ने शासन-व्यवस्था के साथ-साथ समाज-निर्माताओं को चेताया है और गंभीरतापूर्वक इस विडम्बनापूर्ण एवं चिन्ताजनक समस्या पर विचार करने के लिये जागरूक किया है, लेकिन क्या कुछ सार्थक पहल होगी?

बहुत जरूरी है कि कोचिंग संस्थान अपनी कार्यशैली एवं परिवेश में आमूल-चूल परिवर्तन करें ताकि छात्रों पर बढ़ते दबावों को खत्म किया जा सके। फिलहाल जरूरी यह भी है कि इन संस्थानों में एक ऐसे तंत्र को विकसित किया जाए, जो निराश, हताश और अवसादग्रस्त छात्रों के लगातार संपर्क में रहकर उनमें आशा का संचार कर सके, उन्हें सकारात्मकता के संस्कार दे सके। इसके लिए

स्थाई तौर पर कुछ मनोवैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों की सेवाएं भी ली जा सकती हैं।

छात्रों के सिर पर परीक्षा का तनाव एवं अक्ल आने की दोड़ प्रतिस्पर्धा के दौर में और भी बढ़ गयी है। आज रोजगार के अवसर लगभग समाप्त हैं। ग्रेजुएशन कर चुकने वाला छात्र केवल किसी दफ्तर में ही अपने लिये सम्भावनायें तलाशता है। लेकिन नौकरी नहीं मिलती। बेरोजगारी अवसाद की ओर ले जाती है और अवसाद आत्महत्या में त्राण पाता है। लेकिन कोचिंग संस्थानों एवं शिक्षा के उच्च संस्थान में अवसाद पसरा है और उसके कारण छात्र यदि आत्महत्या करते हैं, तो यह इस उच्च शैक्षणिक संस्थानों एवं कोचिंग संस्थानों के भाल पर बदनुमा दाग है। यह माना जाता है कि देश की सबसे प्रखर प्रतिभाएं इन्हीं कोचिंग संस्थानों में पहुंचती हैं, जहां लगातार हो रही आत्महत्या की खबरें यह तो बताती ही हैं कि कोचिंग संस्थानों में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा, साथ ही वे बहुत से बच्चों और उनके अभिभावकों के सपने को तो तोड़ते ही हैं लेकिन उनकी उम्मीद की सांसों को ही छीन लेते हैं। बहुत जरूरी है कि कोचिंग संस्थान अपनी कार्यशैली एवं परिवेश में आमूल-चूल परिवर्तन करें ताकि छात्रों पर बढ़ते दबावों को खत्म किया जा सके, इन दबावों के कारण ही कुछ छात्र आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो जाते हैं। जब छात्रों में अक्ल आने की मनोवृत्ति, कैरियर एवं बी नम्बर वन की दौड़ सिर पर सवार होती है और उसे पूरा करने के लिये साधन, क्षमता, योग्यता एवं परिस्थितियां नहीं जुटा पाते हैं तब कुंठित, तनाव एवं अवसादग्रस्त व्यक्ति को अन्तिम समाधान आत्महत्या में ही दिखता है। इनदिनों शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा एवं अभिभावकों की अतिशयोक्तिपूर्ण महत्वाकांक्षाओं के कारण आत्महत्या की घटनाएं अधिक देखने को मिल रही हैं।

‘ऑपरेशन सिंदूर’

एक बार फिर जता दिया है कि आतंकी हमलों को बर्दाश्त करेगा भारत

भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जवाब 15 दिन बाद ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के माध्यम से देकर एक बार फिर यह जता दिया है कि अब वह न तो चुप रहेगा और न ही आतंकी हमलों को बर्दाश्त करेगा। इस हमले में भारत के 26 निर्दोष लोगों की जान गई थी और यह हमला स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों से ही संचालित किया गया था। इसके सटीक जवाब में भारत ने 7 मई सुबह डेढ़ बजे पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकियों के 9 ठिकानों को ध्वस्त करते हुए ‘ऑपरेशन सिंदूर’ को अंजाम दिया। भारत की यह एक सुनियोजित, सीमित और सटीक सैन्य कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य स्पष्ट था, आतंकवाद को उसी की जमीन पर कुचलना। इस ऑपरेशन को ‘सिंदूर’ नाम देना भारत की सांस्कृतिक और भावनात्मक सोच को दर्शाता है। ‘सिंदूर’ एक ओर जहां भारतीय संस्कृति में शक्ति, सौभाग्य और सम्मान का प्रतीक है, वहीं इस संदर्भ में यह उन शहीदों के बलिदान की लालिमा भी है, जिनकी शहादत का बदला लेने के लिए यह कार्रवाई की गई।

भारत ने आतंकी गुटों की कमर तोड़ने की कोशिश की

ऑपरेशन सिंदूर के जरिये भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि यह ऑपरेशन केवल उन आतंकी ढांचों के विरुद्ध था, जो लगातार भारत में घुसपैठ, आत्मघाती हमले और हथियारों की तस्करी को बढ़ावा दे रहे थे। बहावलपुर जैश-ए-मोहम्मद का गढ़ है, वहीं मुजफ्फराबाद और कोटली लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के लिए लांच पैड के रूप में काम आते हैं। इन स्थानों पर हुए हमलों के माध्यम से भारत ने उन आतंकी गुटों की कमर तोड़ने की कोशिश की है, जो वर्षों से भारत को अस्थिर करने की कोशिश में लगे हुए थे। इस ऑपरेशन के जरिये भारत ने अपने नागरिकों को यह भरोसा भी दिलाया है कि देश की सुरक्षा महज कागजों तक सीमित नहीं है बल्कि उसे धरातल पर भी लागू किया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर यह विश्वास पैदा करता है कि अब भारत किसी भी आतंकी हरकत का जवाब उसी भाषा में देगा और अपने सैनिकों और नागरिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जाने देगा। यह संदेश केवल पाकिस्तान के लिए ही नहीं बल्कि उन ताकतों के लिए भी है, जो सीमा पार से भारत के खिलाफ जंग छेड़े हुए हैं।

आतंकवाद से निपटने के लिए किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं

भारतीय वायुसेना ने इस ऑपरेशन के तहत अत्याधुनिक मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए बहावलपुर, मुजफ्फराबाद, कोटली, मुरीदके, बाघ और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की कुछ आतंक-प्रवण लोकेशनों पर हमला कर पूरी दुनिया को यह दिखा दिया है कि आतंकवाद से निपटने



के लिए उसे अब किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है और वह अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव कदम उठाने को तैयार है। इस ऑपरेशन की योजना और क्रियान्वयन अत्यंत गोपनीय और तकनीकी रूप से उन्नत स्तर पर हुई। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने 22 अप्रैल के हमले के बाद जिस तेजी से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों की पहचान की और सेना के साथ समन्वय किया, वह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की परिपक्वता का प्रमाण है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी बयान में स्पष्ट किया गया है कि इस कार्रवाई का उद्देश्य केवल आतंकवाद के अड्डों को निशाना बनाना था, न कि पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों या नागरिक आबादी को। इस ऑपरेशन के दौरान भारत ने कुल 24 मिसाइलें दागी, जिनमें से अधिकांश लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के ठिकानों पर सटीकता से गिरी।

बताया जा रहा है कि इन हमलों में कई आतंकियों के मारे जाने की खबर है, जिनमें लश्कर और जैश के कई शीर्ष कमांडर भी शामिल हैं, जो भारत में आतंकी हमलों की योजना बनाते रहे हैं। पाकिस्तान का स्थानीय मीडिया और प्रशासन पहले इस हमले को नकारते रहे, फिर अलग-अलग बयान देकर भ्रम फैलाने की कोशिश की। पाकिस्तानी सेना के आईएसपीआर प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने दावा किया कि भारत ने 6 अलग-अलग स्थानों पर मिसाइलें दागी, जिनमें 8 नागरिकों की मौत हुई। वहीं दूसरी ओर, पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने जियो टीवी पर दावा किया कि भारत ने अपने ही हवाई क्षेत्र से हमला किया और मिसाइलें रिहायशी इलाकों पर गिरी। पाकिस्तान के दावे आपस में ही विरोधाभासी हैं, जो इस बात का स्पष्ट संकेत

है कि वे न तो इस हमले के लिए तैयार थे और न ही उनके पास इसकी ठोस जानकारी है। वहीं, भारत ने इस ऑपरेशन के तुरंत बाद अमेरिका को इस कार्रवाई की जानकारी दी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अमेरिकी एनएसए और विदेश मंत्री मार्को रुबियो से बात कर उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि यह कार्रवाई पूरी तरह आतंकवाद के खिलाफ थी, न कि पाकिस्तान की संप्रभुता के विरुद्ध। भारतीय दूतावास ने अमेरिका में बयान जारी कर बताया कि भारत ने किसी भी पाकिस्तानी नागरिक, सैन्य या आर्थिक ठिकानों को निशाना नहीं बनाया, केवल उन्हीं आतंकी शिविरों पर हमला किया गया, जो भारत के खिलाफ साजिश रच रहे थे।

सेना को पूर्ण स्वतंत्रता दी

इस ऑपरेशन के पूरे समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसकी निगरानी कर रहे थे। उन्होंने सेना को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी और इस ऑपरेशन की बारीकियों पर लगातार नजर बनाए रखी। ऑपरेशन पूरा होने के बाद भारतीय सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘एक्स’ पर ‘जस्टिस इज सर्व्व’ यानी ‘न्याय हो गया’ लिखा जबकि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ‘भारत माता की जय’ के नारे के साथ इस कार्रवाई को राष्ट्र के प्रति समर्पित किया। इस ऑपरेशन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ना स्वाभाविक था। पाकिस्तान की ओर से फायरिंग और जवाबी बयानबाजी जारी रही। पाकिस्तान के मीडिया ने प्रोपेगंडा फैलाने के लिए यह दावा किया कि पाकिस्तान ने भारत के 6 फाइटर जेट मार गिराए हैं, जिसमें 3 राफेल, 2 मिग-29 और 1 सुखोई शामिल हैं, साथ ही भारतीय सेना की 12वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड के मुख्यालय को नष्ट करने का झूठा दावा भी किया गया। हालांकि भारत द्वारा इन

बेबुनियाद झूठे दावों को सिरे से खारिज कर दिया गया है।

आतंकवाद के खिलाफ अपने दृष्टिकोण को और मजबूत तरीके से प्रस्तुत करेगा भारत

भारत का अगला कदम अब इस कार्रवाई को कूटनीतिक और रणनीतिक स्तर पर वैश्विक समर्थन में बदलना होगा। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत आतंकवाद के खिलाफ अपने दृष्टिकोण को और मजबूत तरीके से प्रस्तुत करेगा। अमेरिका, फ्रांस, रूस और इजरायल जैसे देश पहले ही भारत के साथ खड़े नजर आ रहे हैं परंतु संयुक्त राष्ट्र और इस्लामी देशों के संगठन (आईओसी) में पाकिस्तान अपने झूठे प्रचार को हवा देने की कोशिश अवश्य करेगा, इसलिए भारत को अब इस कूटनीतिक लड़ाई में भी स्पष्टता और तथ्यों के साथ आगे बढ़ना होगा।

बहरहाल, ऑपरेशन सिंदूर भारत की सैन्य और कूटनीतिक परिपक्वता का प्रतीक है। इसने साबित कर दिखाया है कि भारत अब संयम और जवाबदेही के साथ अपनी रक्षा नीति पर अमल कर रहा है। ‘सिंदूर’ का रंग भले ही सांस्कृतिक दृष्टि से सौभाग्य और शक्ति का प्रतीक हो परंतु इस सैन्य कार्रवाई में यह रंग आतंकवाद के विरुद्ध प्रतिशोध और शौर्य का प्रतीक बन गया है। भारत ने दुनिया को यह बता दिया है कि वह न तो युद्ध चाहता है, न टकराव लेकिन यदि उसकी सीमाओं, नागरिकों और संप्रभुता को कोई चुनौती देगा तो उसका जवाब भी उतना ही सटीक, तीव्र और निर्णायक होगा। भारत का यह बदलता हुआ रवैया उसकी सुरक्षा नीति को नई दिशा दे रहा है और यह संकेत है कि आने वाले समय में कोई भी आतंकी घटना भारत को मूकदर्शक नहीं बनाएगी बल्कि तत्काल और निर्णायक प्रतिघात से दुश्मन की कमर तोड़ी जाएगी।

हर आँगन से उठती सिसकी
सदियों से खामोश है--
आँगन से आँगन तक के सफ़र में।

गुज़रती हुई सदियाँ
तमाम उम्र के बेगार का अन्त
सचमुच बहुत भयावह है।

बचपन गुज़रा, जवानी गुज़री
बुढ़ापे तक अस्तित्व पर पर्दा ही पर्दा है।

देवी-सी पूजी गई हो
या दासी-सी तिरस्कृत रही हो,
मनुष्य की पहचान से हमेशा महरूम रही।

पाषाण-युग से कम्प्यूटर तक का
सफ़र तय कर चुका संसार,
पर आधी दुनिया अभी तक
आँगन से आँगन तक के सफ़र में ही दफ़न है।

खामोशियों में भी कुछ शोर रहता है
और परछाइयों के पीछे
कोई आहट दिल-ओ-दिमाग में
दूर-दूर तक फैली है तन्हाई

फिर भी, गुज़रे वक़्त का इन्तज़ार रहता है,
कोशिशें नाकाम हजार बार कीं
खुद को समझाने की
कोई रहनुमा नहीं जो सम्भाले हालात को।

आँखों में आँसू, होंठों पर दुआ,
दरवाज़े पर इन्तज़ार करती मेरी माँ--
देखती है स्कूल जाते नन्हें बच्चों में मुझे अब भी,

जानती हूँ कि बहुत दूर हूँ उससे, मैं
फिर भी, घर वापस आते बच्चों में
ढूँढ़ती हूँ उसकी आँखें मुझे
अभी भी, हर रोज़

सँवारती है मेरी एक-एक चीज़
करती हुई पिता जी से मेरे बचपन की बातें
दरवाज़े पर इन्तज़ार करती मेरी माँ।

सो जाने पर प्यार से सहलाती मेरे सिर को,
छुपाती है अपने हर ग़म
मुझे देख मुस्कराती
दरवाज़े पर इन्तज़ार करती मेरी माँ।

पत्थर के देवताओं से
कई-कई दिन भूखी-प्यासी रहकर भी
माँगती है मेरी लम्बी उम्र के लिए दुआ

आसमान से भी ज़्यादा अपनी बाहें फैलाए
करती है मुझे प्यार,
सागर से भी प्यारी आँसू छलकाती
दरवाज़े पर इन्तज़ार करती मेरी माँ।

फिर किस इन्तज़ार में
ये चन्द साँसें चल रही हैं

जज़्बातों की रोज़ ही जलती होली
फटी-नुची लाशों की रोज़ की नुमाइश
दो रोटियों में सिमटा वजूद

फिर किसमें ढूँढ़ूँ खुद की पहचान।

अनामिका तिवारी

‘हिन्दू’ झेलते रहेंगे न्यायिक और प्रशासनिक भेदभाव?

@ अंकित कुमार

पाकिस्तान प्रायोजित हिन्दू धर्म विरोधी पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत में अधिकांश लोगों के मन में अब यह सवाल कौंध रहा है कि क्या अब असली धर्मयुद्ध यानी अगला महाभारत शुरू होने वाला है, क्योंकि अपने ऊपर अनवरत हमलों, न्यायिक और प्रशासनिक भेदभाव के चलते हिंदुओं का धैर्य अब टूटने के कगार पर खड़ा है! जानकार बताते हैं कि आजादी से पहले और आजादी के बाद की सरकारों ने और उनके अधीनस्थ उच्चतम न्यायालय ने अपनी जिस हिन्दू विरोधी मानसिकता का परिचय दिया है और उनकी कथनी और करनी में जो बहुत अंतर नजर आने लगा है, वह तो धर्मयुद्ध भड़काने जैसा ही प्रतीत होता है! यक्ष प्रश्न है कि आखिर कबतक ‘हिन्दू’ झेलते रहेंगे न्यायिक और प्रशासनिक भेदभाव? और यदि धैर्य टूटा तो फिर क्या होगा?

इसलिए जनमानस में चर्चा है कि अब ऐसी पक्षपाती संस्थाओं और उसके मूल स्रोत संवैधानिक व्यवस्थाओं/कानूनों के खिलाफ लीगल सर्जिकल स्ट्राइक करने का दबाव निर्वाचित जनप्रतिनिधियों पर बनाया जाए। क्योंकि यदि नेताओं को यह बात समझ में आ गई तो समझो कि इसके खिलाफ बवाल होना तय है। दरअसल, यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि भाजपा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे ने सुप्रीम कोर्ट पर आरोप लगाते हुए जो बातें कहीं हैं, उसके विश्लेषण से यह सवाल पैदा हो रहे हैं।

बता दें कि सांसद दुबे ने कहा था कि “इस देश में यदि कोई धर्मयुद्ध भड़काने का जिम्मेदार होगा, तो वह सुप्रीम कोर्ट और उसके न्यायाधीश ही होंगे!” तभी तो उनके इस आरोप से बड़ा विवाद खड़ा हो गया और विपक्ष ने उनकी तीखी आलोचना की। लेकिन प्रसिद्ध वैज्ञानिक, लेखक और वक्ता आनंद रंगनाथन ने एक वीडियो बयान जारी कर सांसद दुबे का पूर्ण समर्थन किया है और रंगनाथन ने अपनी धाराप्रवाह अंग्रेजी में सुप्रीम कोर्ट से जो 9 सवाल पूछे हैं, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। कोर्ट को अविलंब इस पर अपना पक्ष देने की पहल करनी चाहिए, अन्यथा जनमानस में फैली भ्रांति उसके अस्तित्व पर भी सवाल उठा सकती हैं।

दरअसल, आनंद रंगनाथन पूछते हैं कि, पहला, जब मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा हटाने वाला अनुच्छेद 370 समाप्त किया, तो सुप्रीम कोर्ट ने विपक्ष की याचिकाओं पर तुरंत विशेष पीठ बनाकर जल्द सुनवाई की। लेकिन 1990 में कश्मीरी हिंदुओं पर हुए अत्याचारों- जैसे जबरन पलायन, घरों पर कब्जा, मंदिरों का विध्वंस, हत्याएं, बलात्कार, नौकरी से निकालना- पर दायर याचिकाओं को यह कहकर खारिज कर दिया कि “अब बहुत समय हो गया है, हम यह मामला नहीं खोल सकते।” इस पर उन्होंने सवाल उठाया है कि क्या यह दोहरा मापदंड नहीं है? क्या इससे हिंदू समाज में आक्रोश पैदा नहीं होगा? क्या यह धर्मयुद्ध भड़काना नहीं है?

दूसरा, सुप्रीम कोर्ट को आज वक्फ बोर्ड की चिंता है, लेकिन पिछले 30 वर्षों में वक्फ बोर्ड द्वारा अवैध तरीके से



हड़पी गई संपत्तियां, समानांतर न्याय प्रणाली और कर नहीं भरना- क्या ये सब अदालत को दिखाई नहीं दिए? आज यदि वक्फ कानून के सुधार से इस्लाम खतरे में लगता है, तो क्या हिंदुओं की जमीनों पर मस्जिदें और मकबरे बनाना उचित है? वक्फ बोर्ड ने पिछले 10 वर्षों में 20 लाख हिंदू संपत्तियां कब्जा लीं- इस पर सुप्रीम कोर्ट की चुप्पी धर्मयुद्ध नहीं तो और क्या है?

तीसरा, हिंदू मंदिर सरकार के अधीन क्यों हैं, उनकी आय से मदरसों, हज यात्रा, वक्फ बोर्ड, इफ्तार पार्टी, कर्ज आदि पर खर्च क्यों किया जाता है? वहीं, हिंदू धार्मिक कार्यों पर रोक, उनकी याचिकाओं को लटकाना, अल्पसंख्यकों को हमेशा प्राथमिकता देना- क्या यह न्याय है? या हिंदू समाज के मन में आक्रोश उत्पन्न करने का एक तरीका है?

चौथा, शिक्षा के अधिकार के तहत, हिंदू संस्थाओं को 25% सीटें अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित करनी होती हैं। जबकि मुस्लिम और ईसाई संस्थाओं पर कोई ऐसा नियम नहीं। इससे हजारों हिंदू स्कूल बंद हो गए और हिंदू बच्चे दूसरे धर्मों की संस्थाओं में पढ़ने लगे। क्या यह भी धर्मांतरण को बढ़ावा नहीं है? क्या सुप्रीम कोर्ट को यह पक्षपात दिखाई नहीं देता?

पांचवां, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी दोहरी नीति: हिंदुओं की बात हेट स्पीच, और दूसरों की बात फ्री स्पीच मानी जाती है। नूपुर शर्मा ने सिर्फ हदीस का उल्लेख

किया- उसे कोर्ट ने हेट स्पीच कहा। लेकिन स्टालिन और अन्य नेताओं ने सनातन धर्म को “रोग” बताया- कोर्ट ने उस पर चुप्पी साध ली। क्या यह निष्पक्ष न्याय है?

छठा, सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू परंपराओं जैसे दशहरे के बली प्रथा पर रोक लगा दी, लेकिन हलाल, ईद के दौरान सामूहिक पशुहत्या- उस पर कोई सवाल नहीं। जन्माष्टमी पर हांडी की ऊँचाई पर रोक, लेकिन मोहर्रम की हिंसा पर कोई कार्रवाई नहीं। दिवाली के पटाखे पर्यावरण के लिए बुरे, लेकिन क्रिसमस के पटाखे नहीं। क्या यह भेदभाव नहीं?

सातवां, प्लेसेस ऑफ वंशिश एक्ट 1991 को 2019 में कठोर बना दिया गया, ताकि 15 अगस्त 1947 से पहले के धार्मिक स्थलों की स्थिति में कोई बदलाव न किया जा सके। इससे हिंदुओं की प्राचीन मंदिरों को पुनः प्राप्त करने की राह बंद हो गई। राम मंदिर के लिए वर्षों संघर्ष करना पड़ा, बाकी स्थल अब भी विधर्मियों के कब्जे में हैं। क्या यह ऐतिहासिक अन्याय नहीं?

आठवां, शबरीमाला मामले में भी कोर्ट ने हिंदू भावनाओं को चोट पहुँचाई। कुछ मंदिरों में पुरुषों की, कुछ में महिलाओं की प्रवेश परंपराएं हैं- लेकिन कोर्ट ने केवल हिंदुओं को निशाना बनाया। जबकि इस्लाम में महिलाओं को मस्जिद, कुरान आदि से रोका जाता है, ईसाई धर्म में महिला पादरी नहीं बन सकती- तो उनपर कोई सवाल क्यों नहीं?

नौवां, शाहीनबाग आंदोलन और सीएए विरोध में जो दंगे हुए, उस पर भी सुप्रीम कोर्ट की भूमिका एकतरफा थी। सार्वजनिक रास्ता रोकने वाले प्रदर्शन पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई। क्या यह कानून का मज़ाक नहीं? और क्या यह भी हिंदू समाज में आक्रोश नहीं बढ़ाता?

इसलिए सवाल उठता है कि आखिर इस देश के मूल निवासियों से, इस देश के वासियों से भेदभाव क्यों करते हैं, भारत के न्यायाधीश? और इतना सबकुछ होने के बाद भी हमारा नागरिक प्रशासन चुप क्यों है? क्या पक्ष और विपक्ष के नेताओं में इतनी भी अक्ल नहीं है कि वो इन बातों को समझ सकें और संसद में इसे उठा सकें। ऐसे न्यायाधीशों के खिलाफ संसद में महाभियोग ला सके। इससे पहले इन सभी बातों पर संसदीय बहस होनी चाहिए, ताकि किसकी क्या राय है, भारतीय उसे समझ सकें। उनके नेता उन्हें समझा सकें।

अलबत्ता, श्री रंगनाथन के सवालों से तो यही प्रतीत होता है कि सिर्फ सरकारें ही नहीं बल्कि हमारे न्यायिक प्रतिष्ठान भी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के परिचायक दिखाई दे चुके हैं। इसलिए सुप्रीम कोर्ट को स्वतः संज्ञान लेते हुए एक न्यायिक बैंच गठित करनी चाहिए और सभी आरोपों पर एक एक करके निर्णय स्पष्ट करना चाहिए। अन्यथा यदि हिन्दू जनमानस उद्धेलित हो गया तो उसकी न्यायिक स्वतंत्रता और संवैधानिक सर्वोच्चता की मूल भावना पर भी आंच आ सकती है!

वैभव सूर्यवंशी ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा

@ सौम्या चौबे

इस बार के आईपीएल में कई युवा अपना परचम लहरा रहे हैं। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में राजस्थान रायल्स की ओर से खेल रहे 14 साल के वैभव सूर्यवंशी ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा है। वह नए भारत की सनसनी है। उसे चहुंओर सराहना मिल रही है। 28 अप्रैल को जयपुर में गुजरात टाइटंस के खिलाफ वैभव ने ऐसी धुंधाधार पारी खेली कि सबकी आंखें खुली रह गईं। 35 गेंदों में उसने शतक जड़ दिया। टी20 फॉर्मेट में सबसे कम उम्र में शतक बनाने का यह नया रिकॉर्ड है। इससे पहले राजस्थान टीम के ही यूसुफ पठान ने 15 साल पहले 37 गेंद में शतक लगाया था। उस समय वैभव का जन्म भी नहीं हुआ था। बिहार के समस्तीपुर से आने वाले वैभव सूर्यवंशी को देश का नया सितारा कहा जाने लगा है। उसे अपने पहले मैच के लिए काफी इंतजार करना पड़ा। आईपीएल 2025 में 19 अप्रैल को जब उसने अपने पहले मैच में पहली गेंद का सामना करते हुए छक्का लगाया था तभी से उसकी निडर बल्लेबाजी की तारीफ होने लगी।

लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ वैभव का डेब्यू मैच

वैभव के सामने गेंदबाज थे शार्दुल ठाकुर जो भारतीय टीम की ओर से भी खेल चुके हैं। लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ यह उसका डेब्यू मैच था। उसने 20 गेंद में 34 रन बनाए थे। वैभव की इस छोटी सी पारी ने सबका मन मोह लिया। यहां तक कि विपक्षी टीम लखनऊ सुपर जायंट्स के मालिक संजीव गोयनका ने भी उसे दुलारते हुए उसकी सराहना की। हालांकि, राजस्थान रायल्स की टीम अपने घरेलू मैदान पर यह मैच 2 रन से हार गई। यह मुकाबला बड़ा रोमांचक था। मगर, गुजरात के खिलाफ वैभव सूर्यवंशी ने चौकों और छक्कों की ऐसी झड़ी लगाई कि सब देखते ही रह गए। गुजरात टीम का कोई भी गेंदबाज उस पर अंकुश नहीं लगा पाया। प्रसिद्ध कृष्णा और राशिद खान समेत सभी गेंदबाज बौने नजर आ रहे थे। उसके बल्ले से 11 छक्के और 7 चौके निकले। आप सोच सकते हैं कि बिहार के इस किशोर ने कितनी ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की होगी। जब उसका शतक पूरा हुआ तो पूरा ड्रेसिंग रूम उसके सम्मान में खड़ा हो गया। राजस्थान टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड भी उछल पड़े। सभी साथी खड़े होकर उसे बधाई दे रहे थे। पूरा सवाई मान सिंह स्टेडियम वैभव के शतक बनने पर झूम रहा था। सबसे बड़ी बात तो यह कि वैभव बाएं हाथ से बैटिंग करते हैं और यशस्वी जायसवाल के साथ पारी की शुरुआत करने की जिम्मेदारी निभाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि आईपीएल के माध्यम से आज कई युवा अपनी दावेदारी ठोक रहे हैं। पंजाब टीम की ओर से खेल रहे युवा प्रियांश ने भी एक जबर्दस्त पारी से सबका दिल जीत लिया है। चेन्नई की टीम में आयुष म्हात्रे ने एक कमाल की पारी खेली है। केरल के युवा विग्नेश पुथुर ने

गुजरात के खिलाफ वैभव सूर्यवंशी ने चौकों और छक्कों की ऐसी झड़ी लगाई कि सब देखते ही रह गए।

गुजरात टीम का कोई भी गेंदबाज उस पर अंकुश नहीं लगा पाया। प्रसिद्ध कृष्णा और राशिद खान समेत सभी गेंदबाज बौने नजर आ रहे थे। उसके बल्ले से 11 छक्के और 7 चौके निकले।



मुंबई की ओर से खेलते हुए अपने पहले ही मैच में 32 रन देकर 3 विकेट झटक लिये। ये युवा ही देश का भविष्य हैं। इन्हें हम भारतीय टीम में देख सकते हैं।

भारतीय टीम में शामिल होने का अवसर

आईपीएल एक ऐसा लोकप्रिय मंच है जहां दमदार प्रदर्शन करके भारतीय टीम में शामिल होने का अवसर मिलता है। वैभव ने निर्भीक बल्लेबाजी का ऐसा नमूना पेश किया है कि उसे भारतीय टीम के भविष्य नया सितारा बताया जा रहा है। उसे आईपीएल 2025 की खोज कहना गलत नहीं होगा। जब राजस्थान रायल्स ने वैभव सूर्यवंशी को एक करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा तो बहुतों को बड़ी हैरानी हुई। लोगों ने सोचा कि 14 साल का यह लड़का कौन सा तीर मार लेगा। टीवी पर एक रोचक विज्ञापन भी आया जिसमें महेंद्र सिंह धोनी और राजस्थान टीम के कप्तान संजू सैमसन इतने कम उम्र के खिलाड़ी पर

बातचीत कर रहे हैं। धोनी लगभग कटाक्ष करते हैं जिसका सैमसन बड़ी होशियारी से जवाब देते हैं।

पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर यदि किसी की सराहना करें तो समझिए बड़ी बात है। वैभव सूर्यवंशी के जोरदार शतक पर उन्होंने एक्स पर लिखा 'वैभव का निडर दृष्टिकोण, बल्लेबाजी की गति, लेंथ का जल्द अनुमान लगाना और आती हुई गेंद पर पूरी ताकत से प्रहार करना उनकी शानदार पारी का नुस्खा था। इसी का परिणाम था कि वह 38 गेंद में 101 रन बना पाए।' यूसुफ पठान ने भी आईपीएल में सबसे तेज शतक का अपना रिकॉर्ड तोड़ने पर वैभव को बधाई दी है। देश के एक और पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह ने कहा है कि 'वह निडर रवैए के साथ खेल रहा है। अगली पीढ़ी के इस युवा के प्रदर्शन से मुझे गर्व है।' पूर्व सलामी बल्लेबाज श्रीकांत कहते हैं 'हम एक अभूतपूर्व बल्लेबाज का उदय देख रहे हैं।'

जाहिर है, आज हर भारतीय इस लड़के पर गर्व कर

रहा है। भारतीय टीम में वैभव सूर्यवंशी का प्रवेश कब होगा, यह बताना आसान नहीं है। अभी उसे लंबा सफर तय करना है। आईपीएल के प्रदर्शन से भविष्य के लिए संकेत जरूर मिलता है लेकिन उसे निरंतरता बनाए रखनी होगी। केवल एक शतक से इतनी जल्दी अनुमान लगाना उचित नहीं होगा। शतक लगाने के बाद अगले मैच में वह शून्य पर आउट हो गया। वैसे भी हर मैच में वह शतक नहीं लगा सकता क्योंकि क्रिकेट अनिश्चितताओं से भरा खेल है। राजस्थान की टीम इस बार खिताबी दौड़ से बाहर हो गई है। उसका प्रदर्शन बढ़िया नहीं रहा है।

बिहार के वैभव ने इतने कमाल का प्रदर्शन किया है तो उसे पुरस्कार देने में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तनिक भी देर नहीं लगाई। उन्होंने आईपीएल के इतिहास में सबसे कम उम्र के वैभव सूर्यवंशी द्वारा शतक लगाने पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। राज्य सरकार उसे 10 लाख रुपये की सम्मान राशि भी देगी।

दिनों, महीनों या वर्षों में हम जातिगत गणना भी करेंगे सभी जातियाँ एकात्म होकर भारतीय सेना के संग खड़ी भी दिखेंगी

पाकिस्तानी आतंकियों द्वारा बाईस अप्रैल के पहलगाम अटैक के बाद कुछ लोग कह रहे थे कि यह देश का ध्यान बाँटने का केंद्र सरकार का प्रयत्न है। वस्तुतः जाति आधारित जनगणना की घोषणा का यदि कोई देवयोग था, तो वह पाकिस्तान पर भारतीय हमले की यह पूर्वसंध्या ही थी। यह देश को एक करने, एक रखने, एक दिशा में बढ़ाने का सर्वाधिक सटीक समय है। अब राष्ट्रीय संकट के इन दिनों, महीनों या वर्षों में हम जातिगत गणना भी करेंगे और सभी जातियाँ एकात्म होकर भारतीय सेना के संग खड़ी भी दिखेंगी। यही है नया भारत। मूल बात- “संघ का दृष्टिकोण- यदि, जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है, तो समर्थन है; यदि इसका उद्देश्य राजनीति और समाज को बांटना है, तो उसका सदैव ही विरोध है”।

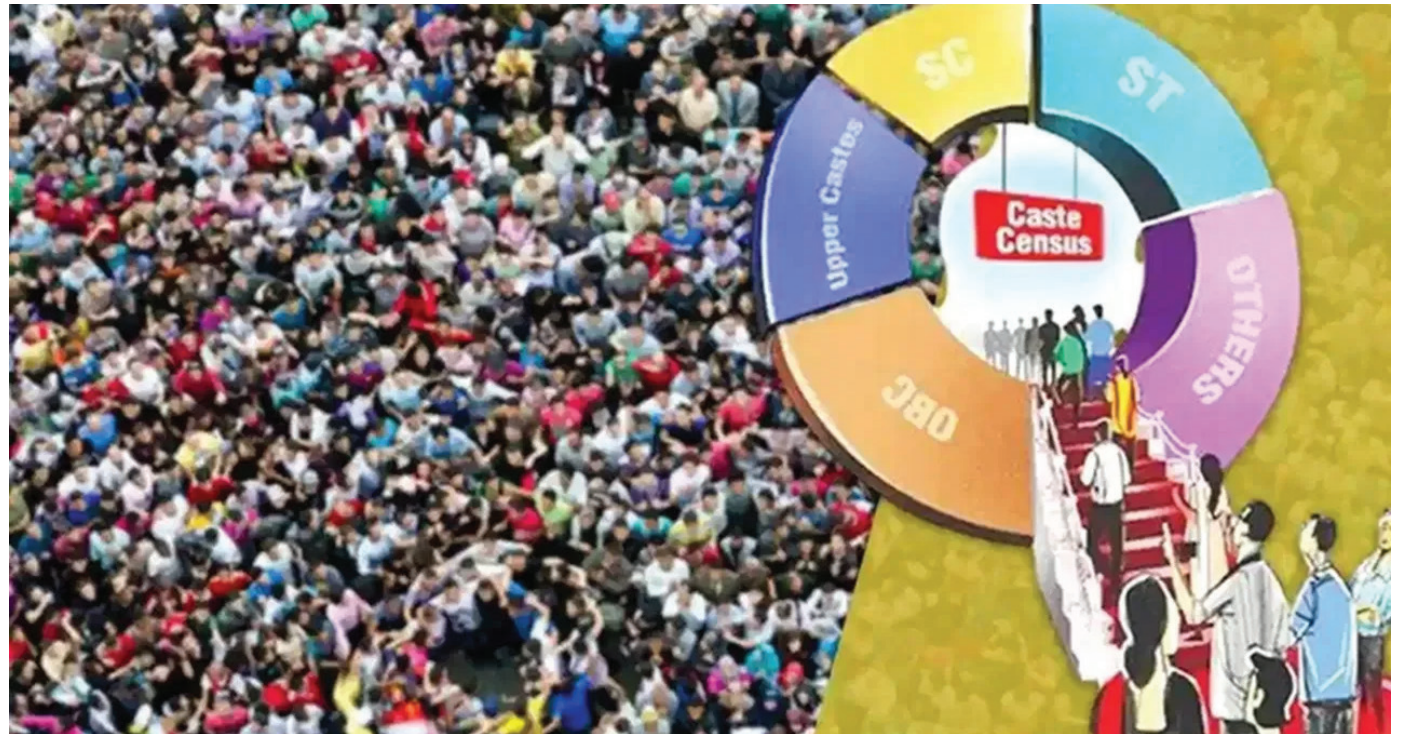
भारत की एकता-अनेकता, खंडन-मंडन-विखंडन, रसता-समरसता, श्रेय-हेय, उत्कर्ष-निष्कर्ष, सफलता-असफलता, सबलता-निर्बलता आदि-आदि जैसे सभी तत्व हमारी जाति व्यवस्था के सुफलित होने पर ही निर्भर करता है। जाति व्यवस्था के उत्कृष्ट प्रयोग से हम हमारे देश संगठन का समुत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं तो निष्कृष्ट उपयोग से हम रसातल में भी जा सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भारतीय जाति व्यवस्था को लेकर यही राय रही है। इस राय के अनुरूप ही आरएसएस भारतीय जाति व्यवस्था पर समय-समय पर प्रयोग-अनुप्रयोग करता है और करता रहेगा।

जाति विमर्श देश के समक्ष प्रामाणिकता से स्पष्ट व स्थापित

अपनी सौ वर्षों की यात्रा में संघ का यह जाति विमर्श देश के समक्ष प्रामाणिकता से स्पष्ट व स्थापित है। इस अवसर पर आरएसएस सौ वर्षीय प्रामाणिक जातीय दृष्टिकोण निश्चित ही देश को इस निर्णय की व्यापक पूर्व अध्ययन जनित पीठिका का आभास देता है। “संघ जो करेगा ठीक ही करेगा”, आज देश का जनमानस ऐसा सोचने की सुलभ-सहज स्थिति में है। यह सब एकाएक नहीं हुआ है, यह संघ की शतवर्षीय अनथक, अनवरत यात्रा से उपजा तपोबल है। जनता स्पष्टतः जानती है, यदि भाजपा ने जातिगत गणना में तनिक भी राजनैतिक दृष्टिकोण रखा तो सर्वप्रथम संघ ही उसे रोकेगा।

संघ इस निर्णय को तब तक ही मानेगा जब तक यह “न्याय और कल्याण” का उपकरण है। सामयिक, सटीक, नवनुतन रहने वाले संघ ने इस नवीन तथ्य को माना है कि “कल्याणकारी शासकीय योजनाओं की सटीकता हेतु विवेचक सांख्यिकी अनिवार्य है। इस सांख्यिकी के बिना, शासकीय योजनाएं अनुचित वर्ग को लाभान्वित करती हैं, और, दूसरी ओर वंचित वर्ग वंचित ही रह जाता है।

‘उन्हें इतना सारा मिला, हमें केवल ही इतना मिला’, जैसे भाव समाज में उभरने की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इन



भावों के उन्मूलन में भी निश्चित ही अपनी सांगठनिक शक्ति, समाज में पैठ व शुचिता के आधार पर, संघ, देश की मदद कर पायेगा यह विश्वास है। बल्कि, यह भी कहा जा सकता है कि जातिगत जनगणना के मंथन में जो विष निकलेगा उसे पीना और नीलकंठ बनना केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वश की ही बात है। सुधिन, श्रेष्ठीजन यहाँ यह प्रश्न कर सकते हैं कि यदि संघ को इस मंथन से विष निकालने का इतना ही विश्वास है तो फिर इस मंथन को संघ रोकने का प्रयास क्यों नहीं कर रहा ?! इसका उत्तर है कि “एक समय विशेष या कालखंड विशिष्ट में समाज का मंथन भी आवश्यक है और उससे निकले गरल कंठस्थ करना, नीलकंठ बनना और समाज को अमृतपान कराना भी आवश्यक है”। निश्चित ही संघ इस कार्य को भली भाँति कर पायेगा।

“यदि समाज का कोई अंग पीछे है तो उसे आगे लाना ही है”

मूल भारतीय समाज में, अर्थात् हिंदू व हिंदू जनित अन्य धर्मावलंबियों के मानस में एक बात बड़ी स्पष्ट है- “यदि समाज का कोई अंग पीछे है तो उसे आगे लाना ही है” जातिगत सांख्यिकी और उनके विकास के सटीक आंकड़ों से, कई आशंकाओं, विसंगतियों व विराधाभासों का शमन हो जाएगा।

इस आधार पर ही संघ ने केंद्र सरकार के जाति आधारित जनगणना के निर्णय के तत्काल बाद कहा- “यदि जातिगत जनगणना का उद्देश्य न्याय और कल्याण है, तो समर्थन योग्य है; और, यदि इसका उद्देश्य राजनीति और

समाज को बांटना है, तो उसका सदैव ही विरोध”। एक पंक्ति का कथन और सभी को स्पष्ट और दो टूक मार्गदर्शन ! इस अवसर पर मुझे एक प्रसंग स्मरण में आता है- ‘पिछले वर्षों की ही बात है, संघ का एक उच्चस्तरीय पंच दिवसीय चिंतन शिविर बड़ोदरा में आयोजित था। इस कार्यशाला में सर संघचालक जी, सभी सरकार्यवाह जी सहित, समूचा शीर्षस्थ नेतृत्व पूरे समय बिना किसी प्रोटोकाल के सभी कार्यकर्ताओं के मध्य ही भोजन, चर्चा, विश्राम में निमग्न रहता था। कार्यशाला के दूसरे दिन सत्र के मध्य ही किसी अन्य स्वयंसेवक ने मेरी जाति आधारित किसी बात पर तीक्ष्ण प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी। मैंने कोई प्रतिक्रिया, प्रत्युत्तर नहीं दिया। पाँचवे दिन अपने समापन भाषण में संघ नेतृत्व ने बिना किसी का नाम लिए इस घटना उल्लेख किया- “जिसने जातीय दृष्टिकोण से अपनी बात रखी उसने अपने अध्ययन से, सुधार की सकारात्मक आशा से बात रखी, किंतु, जिसने प्रतिक्रिया दी, उसने केवल जाति विशेष का प्रतिनिधि बनकर उत्तर दिया। ध्यान रहे, हम सब इस कार्यशाला में केवल और केवल एक स्वयंसेवक के रूप में सम्मिलित हुए हैं, किसी जाति का प्रतिनिधि बनकर नहीं।” संघ के उन शीर्षस्थ अधिकारी ने जिस कठोर शैली में अपनी इस बात को रखा था उससे संघ का यह स्पष्ट मत, पुनर्प्रसारित हुआ कि संघ के आयोजनों, चर्चाओं में जब हम आते हैं तो केवल एक स्वयंसेवक बनकर आना ही उचित होता है। अपनी जातिगत पहचान को हम अपने जूतों के साथ कक्ष के बाहर ही छोड़ आते हैं।

जाति आधारित जनगणना के निर्णय के संदर्भ में कुछ मत आए हैं, जैसे- जाति जनगणना, हिन्दुत्व की पुर्णाहुति

है। और जैसे, अगर जाति जनगणना होती है तो यह संघ की नाभि नाल में जहर भर देने जैसा होगा। ऐसी और कितनी ही कठोर आशंकाओं के मध्य भी यदि संघ या भाजपा ने सुधार या सोशल रिफॉर्म का गरल होकर नीलकंठ होने का प्रयास किया है तो यह संघ की नित्य प्रार्थना के इस भाव को ही व्यक्त करता है- श्रुतं चैव यत्कण्टकाकीर्ण मार्गं, स्वयं स्वीकृतं नः सुगं कारयेत् ।। अर्थात्, हे भारतमाता, हमें ऐसा ज्ञान दे कि स्वयं स्वीकृत व चयनित यह कंटकाकीर्ण (कांटो भरा) यह मार्ग सुगम हो जाये। स्वयंसेवक बाहुल्य वाली भाजपा ने जाति आधारित जनगणना का यह कांटो भरा मार्ग, राष्ट्रहितार्थ स्वयं ही चुना है।

संघ की जाति संदर्भित अकाट्य व सर्वस्वीकृत मान्यता भी स्वयंसिद्ध सिद्धांत ही तो है- “जातिवाद एक सामाजिक विकृति है, उसे समाज सुधार से हटाया जाना चाहिए, कानून से नहीं थोपना चाहिए।” संघ में बहुधा ही कहीं जाने वाली एक बड़ी सरल, सहज, सिद्ध पंक्ति भी संघ के जाति दर्शन को स्पष्ट करती है- “हर समस्या का हाल केवल एक- हम सब हिंदू एक, हम सब हिंदू एक”।

संघ पूज्य श्रीगुरुजी ने जो कहा, “हमारा हिंदू समाज एक महासागर है- उसमें कोई उथला नहीं, कोई गहरा नहीं।” बाला साहब देवरस ने दोहराया- “यदि स्वयं ईश्वर धरा पर उतरकर इस जातिगत भेदभाव को स्वीकार करने को कहेंगे, तो मैं उनकी बात भी नहीं मानूँगा”। तो आइए हम सभी जातियाँ मिलकर एक दूजे को सिंदूर लगाएँ और संघ की यह बात भी दोहराएँ कि “जाति, हिंदू समाज की पहचान नहीं, उसका असंतुलन है। उसे दूर करना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है।”



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries